चमन-ए-इस्लाम की सैर

लेखक

पं. शिवशर्मा महोपदेशक

(शास्त्रार्थ महारथी)

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्र. परिग्रहण क्रमांक 5315
...ानन्द महिला म...

प्रकाशक

मोहम्मद रफी

तरकारी मंडी, दिल्ली

संस्करण, मई सन् २०१० ई० [मूल्य : चालीस रुपये]

जिसने "चमन-ए-इस्लाम" रूपी बगीचे की सैर नहीं की, तो उसे क्या पता की इस बगीचे की क्या-क्या विशेषताएँ हैं? इसलिए आप इस बगीचे की सैर अवश्य करिये, अल्लाह ताला आपके मन की मुराद अवश्य पूरी करेगा।

इस्लाम का सेवक–

"हिज़बुल्लाह"

चमन इस्लाम की सैर

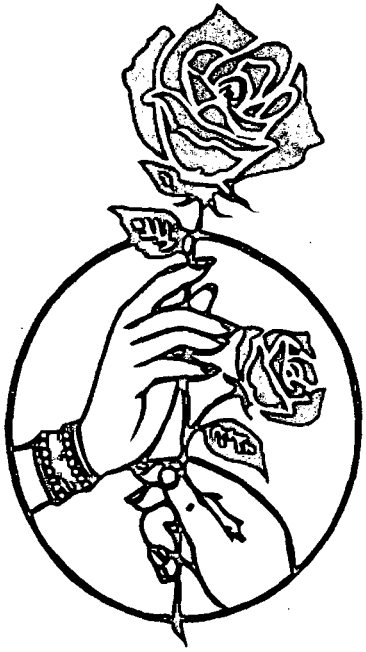

"शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० शिवशर्मा"
(महोपदेशक)

समर्पण

आर्य हिन्दू संस्कृति की रक्षा में
प्राणाहूति देने वाले
अमर शहीदों की
स्मृति में

नोट : आर्य हिन्दू संस्कृति प्रेमियों से निवेदन है कि इस प्रकार की पुस्तकों के प्रकाशन में तन-मन-धन से सहायता प्रदान करने के निमित्त अपने-अपने स्थानीय संगठनों से सम्पर्क स्थापित करें, जिससे हम भविष्य में आपकी अधिक से अधिक सेवा कर सकें।

"प्रकाशक"

भूमिका

सज्जनों! यह पुस्तक "चमन इस्लाम की सैर" इसलिये लिखी गई है कि प्रायः जब मुसलमान मौलवियों से शास्त्रार्थ होता रहता है, तो वे कह देते हैं कि अमुक मसला या रिवायत (पाठ) हमारे मजहब में मौजूद नहीं है पर इस पुस्तक के हाथ में रखने से वे कदापि नहीं कह सकते कि यह बात हमारे यहां नहीं लिखी है। विशेषकर कादयानी भाइयों ने तो इस बात का ठेका ले लिया है कि वे हर एक इस्लामी मामले की नई-नई तावीलें गढ़ें कादयानी लोग चाहते हैं कि मुहम्मदी मत में भी कोई बात विद्या और बुद्धि के विरुद्ध न रहे, परन्तु जिस मत की नींव ही अविद्या पर रक्खी हो वह बुद्धि के अनुसार कैसे बनाया जा सकता है? क्या कभी कोयला भी धोने से सफेद हो सकता है? यदि कोयले को सफेद करना चाहते हो तो उसको अग्नि में डाल दो, वह अग्नि उसके कालेपन को क्षण भर में दूर कर देगी, उस समय वह कोयला अत्यन्त श्वेत बन जायेगा। इसी प्रकार इस्लाम के अन्दर इतनी कलौंध (कलिमा) है कि यह बिना वैदिक अग्नि में डाले अपनी स्याही को दूर नहीं कर सकता ऋषि दयानन्द ने वह भट्टी तैयार कर दी है, बहुतों ने इसकी शरण में आकर अपने हृदय की कालिमा को दूर कर दिया है, शेष कर रहे हैं। प्रायः मुसलमान भाई अपने मत की स्याही के विषय में अनभिज्ञ होकर अपने को परम श्वेत समझते हैं। इसलिए इस धार्मिक चर्चा के समय मैंने यह धर्म सम्बन्धी पुस्तक लिखी है जिससे प्रत्येक धर्मप्रेमी जान सके कि इनके मत के क्या-क्या सिद्धान्त हैं? आप किसी पुस्तक अथवा समाचार-पत्र में कोई सिद्धान्त इस्लाम विषयक पढ़ लें और पता जानना चाहें

कि यह बात कहां पर किस पुस्तक में लिखी है तो तत्काल इस पुस्तक में पूरा पता पा सकते हैं। व्याख्यानों में प्रायः बहुत सी बातें कहकर सुना दी जाती हैं, परन्तु बहुतों को उनका पता नहीं लगता कि यह किस पुस्तक में और किस पते पर लिखी हैं? यह भी सारा पता इस पुस्तक से चल जायेगा। इस पुस्तक में जो-जो प्रमाण संग्रह किये गये हैं वह सुन्नी मुसलमानों की प्रमाणिक पुस्तकों के हैं। कोई सुन्नी इन पुस्तकों के मानने में आना-कानी नहीं कर सकता, हाँ! अपने मजहब को ही छोड़ दे तो वह बात अलग है। यह सारे प्रमाण पुस्तकों को सावधानी से देखकर लिखे गये हैं ना कि किसी दूसरी पुस्तक में से उद्धृत किये हुओं को नकल कर लिया गया है। प्रत्येक भाई, निस्सन्देह रूप से समय पड़ने पर इस पुस्तक में लिखे गये प्रमाण स्वमत मण्डन और परमत खण्डन में दे सकता है। कोष्ठ ब्रैकट के अन्दर की इबारत (पाठ) हमारी अपनी है। समीक्षा भी हमारी लिखी हुई है। इस पुस्तक में छः दस्ते हैं। पहले दस्ते में मिश्कात की सैर है, दूसरे दस्ते में मिनहाजुन्नबूवत की सैर है, तीसरे दस्ते में तारीख खुल्फा की सैर है। चौथे दस्ते में **"शहर बकाया"** की सैर है, पाचवें दस्ते में **"मुरादाबाद के मुकदमे की सैर"** है (जो मेरे ऊपर चला था) छटे दस्ते में **"गयातुल औतार की सैर"** है। इन छहों दस्तों में प्रायः इस्लाम के सारे ही सिद्धान्त आ गये हैं। किसी की निन्दा करने के लिये नहीं न किसी पर व्यर्थ आक्षेप किये गये हैं। यह पुस्तक केवल मुसलमानों के साथ शास्त्रार्थ करने वालों के लिये है जिससे हवालों का ज्ञान हो और यह हवाले शास्त्रार्थ के मध्य प्रमाण रूप में पेश किये जा सकें।

"लेखक"

चमन इस्लाम की सैर

(प्रथम दस्ता)

"मिश्कात की सैर" जिल्द-१

मुसलमान की पहचान–

१-जिसकी जुबान और हाथ से मुसलमान ईजा अर्थात् दुख न पावें।

(मिश्कात किताबुल ईमान सफा ३ हदीस नम्बर ५)

समीक्षा–हाँ ठीक! दूसरे मजहब वाले चाहे कितना ही सताये जावें, परन्तु मुसलमान, मुसलमान के हाथ से न सताया जावे, क्या बढ़िया पहचान बतलाई? धन्य हो!

२-हजरत फरमाते हैं–दोजख अर्थात् नरक में मुझे औरतें रहने वाली दिखाई गई हैं।

(जिल्द १ सफा १० हदीस नम्बर १८)

समीक्षा–इससे सिद्ध है कि दोजख में...औरतें ज्यादातर जायेंगी, वाह! क्या कहना है?

३-अल्लाह कहता है–मुझे आदम की औलाद तकलीफ देती है और जमाना मैं ही हूं।

(जिल्द १ सफा ११ हदीस नम्बर २०)

समीक्षा–लो मुसलमानों! अब तो अल्लामियाँ भी तकलीफ

में मुबतला (परेशान) हो रहे हैं। बेमिस्ल अल्लामियाँ अपनी मिसाल जमाने से दे रहे हैं। अब वैदिक अलंकारों पर आक्षेप न करना।

४-"लाइलाहइल्लिल्लाह..." कहने वाला चोरी और जिना (व्यभिचार) भी करे तो जन्नत अर्थात् स्वर्ग में दाखिल होगा।

(जिल्द १ सफा १२, १३ हदीस नम्बर २४)

समीक्षा–अब तो मुसलमानों की पौबारह है! मजे से दुनियां में कुकर्म करें। यही वजह है कि इस्लाम में ऐसे कुकर्मी शख़्स ज्यादा पाये जाते हैं।

५-जिसने अल्लाह के होने में और मुहम्मद के रसूल होने पर मसीह के रूह अल्लाह (अल्लाह की आत्मा) होने पर गवाही दी उसके कैसे ही आमाल (कर्म) हों, अल्लाह उसे जन्नत अर्थात् स्वर्ग में भेजेगा।

(जिल्द १ सफा १३ हदीस नम्बर २५)

६-जिहाद कौन-सा अफजल (श्रेष्ठ) है? फरमाया (हजरत ने) जिसमें खूं रेजी हो अर्थात–रुधिर बहाया जावे और थोड़ा सा कट जावे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४२)

समीक्षा–मुसलमान लोग इस्लामी सल्तनत न रहने से कहते हैं कि "**जिहाद**" के अर्थ जुबान से इस्लाम का प्रचार करने के हैं, परन्तु जहां खुदमुख्त्यार (स्वतन्त्र) सल्तनतें हैं वहां यह अर्थ नहीं माने जाते। काबुल में मौलाना इनायतुल्ला खां वगैरह पत्थरों

से मार ही डाले गये। सिर्फ इसलिए कि कादयानी (काफिर) थे। आम मुसलमान अहमदियों को काफिर कहते हैं।

७-जमीन और आसमान बनाने से पचास हजार वर्ष पहले अल्लाह ने इन्सान की तकदीर बनाई। अल्लामियां का तख्त पानी पर मौजूद था।

(जिल्द १ सफा २८ हदीस नम्बर ७३)

समीक्षा–क्या अल्लामियां का इल्म कदीम नहीं है? जब अच्छी बुरी तकदीरें पहले ही अल्लामियां ने लिख दी तो इसमें इंसान का क्या कसूर? अगर ज़िना (व्यभिचार) करना लिख दिया तो अल्लाह के हुक्म से इन्सान ज़िना करता है। चोरी करना लिख दिया तो चोरी करता है मजा यह है कि अल्लामियां खुद ही ज़िना और चोरी कराये और फिर खुद ही सजा देकर दोजख (नर्क) में भी डाले। ऐसी अन्धेर नगरी में मुसलमान ही रहना पसंद कर सकते हैं।

८-एक रोज हजरत आदम और हजरत मूसा साहब में आपस में झगड़ा हो पड़ा। हजरत मूसा ने हजरत आदम को ताना दिया कि तुम वही तो हो जिसने खुदा का हुक्म नहीं माना और बहिश्त में गेहूं खा लिया फिर वहां से निकाल दिये गये। आदम मूसा पर गालिब आये और कहा–

हजरत आदम ने कहा–मेरे ऐसा फ़ेल (कर्म) करने से ४० वर्ष पहले तौरेत में ऐसा लिख दिया तो इसमें मेरा क्या कसूर?

जैसा अल्लामियां ने मुझसे कराया, वैसा ही मैंने कर दिया।

(जिल्द १ बाबत तकदीर फसल १ सफा २८ हदीस नम्बर ७५)

९-मरते वक्त जैसे कर्म होंगे, वैसी गति होगी।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ७७)

१०-मां के पेट ही में बाजे दोजखी और बाजे जन्नती होते हैं।

(जिल्द १ सफा २९ हदीस नम्बर ७८)

११-इन्सान के लिए पैदा होने से पहले दोजख (नरक) और जन्नत (स्वर्ग) लिख दिया। अमल (कर्म) भी वैसे ही करेगा।

(जिल्द १ सफा ३० हदीस नम्बर ७९)

१२-आदम की औलाद पर जिना (व्यभिचार) आयद (आवश्यक) कर दी यानी एक हिस्सा जिना जरूर करेगा, ऐसा पहले ही लिख दिया गया।

(जिल्द १ सफा ३० हदीस नम्बर ८०)

समीक्षा—क्या इस ही लिए आप लोग पापों से नहीं डरते? क्यों अपने साथ अल्लामियां को दोजख में घसीटते हो?

१३-सबके दिल अल्लाह की दो उँगलियों में है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ८३)

१४-अल्लाह के हाथ में तराजू है जिससे वह इन्सान का रिज्क (खुराक) कम- ज्यादा करता है।

(जिल्द १ सफा ३२ हदीस नम्बर ८६)

१५-मुशरिकों (मूर्ति पूजकों) के कर्म अल्लाह जानता है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ८७)

१६-अल्लाह ने आदमी की पीठ पर हाथ फेरा।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ८९)

१७-जन्नती जन्नत में जायेंगे चाहे उनके कर्म कितने ही बुरे हों। दोजखी दोजख में जायेंगे चाहे उनके कर्म कितने ही अच्छे हों।

(जिल्द १ सफा ३४ हदीस नम्बर ९०)

समीक्षा–क्या इसका यही मतलब है कि अल्लाह ने जिसको दोजखी लिख दिया अगर वह अल्लाह के लिखे के खिलाफ अच्छे कर्म करेगा तो भी दोजख में ही डाला जायेगा। अगर जिसको जन्नती लिख दिया तो वह चाहे कितने ही बुरे कर्म करे तो भी जन्नत में ही जायेगा? तब तो बुरे कर्म करना व्यर्थ ही रहा? मुसलमानो! किसलिए भूखे मरते हो? क्यों जमीन पर सर रगड़ते हो? किस वास्ते बेकसों के खून की नदियां बहाते हो? शायद तुम्हारे मुकद्दर में दोजख ही लिख दिया हो। ये काफिर बुतपरस्त शायद जन्नत में हूरोगिल्मा पा जायें, शायद इनकी तकदीर में खुदा ने बहिश्त लिख दिया हो। कर्म फिलासफी के अरबी रसूल कैसे जानकार थे यह जान लेना चाहिए?

१८-कलम सब कुछ लिखकर खुश्क हो चुका, यानी जो कुछ लिखना था, वह लिखा जा चुका है, उसमें तगैय्युर तबद्दुल (लौट-फेर) न होगा।

(जिल्द १ सफा ३५ हदीस नम्बर ९४)

समीक्षा–हदीस नम्बर ८९ में बतलाया है कि अल्लाह रिजक को कमती-बढ़ती करता है, परन्तु यहां कहता है कि कुछ लौट-फेर न होगा। **"खुद के कथन में ही कितना विरोधाभास है?"**

१९-मुसलमान और उनके बच्चे जन्नत में जायेंगे। मुनाफिकों के बच्चे और वह खुद दोजख में जायेंगे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ११०)

समीक्षा–मासूम -(निरपराध) बच्चे नरक में क्यों जायेंगे? खुदा ने उनको काफिरों के घर क्यों पैदा किया? वाह रे इंसाफ!

२०-खुदीजा (हजरत की सबसे पहली बीबी) के जहालत के जमाने के (बच्चे) दोजख में हैं।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ११०)

२१- खुदा लौटने वालों की जूतियों की आवाज सुनता है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ११९)

२२- कब्र में ही इंसाफ हो जाता है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १२०)

२३- रसूल ने कहा–मेरी उम्मत अर्थात् कौम में ७३ फिरके होंगे, उनमें एक जन्नती और ७२ दोजखी होंगे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६३)

समीक्षा–हजरत को भी अपने कुरानी मजहब की गड़बड़ी मालूम होती थी, तभी तो जैसे बीज बोये थे, वैसे ही फलों का अन्दाजा भी लगा लिया था।

२४- मेरा कलाम अल्लाह के कलाम को मन्सूख (परिवर्तित) नहीं करता, अल्लाह का कलाम मेरे कलाम को मन्सूख कर देता है, अल्लाह का एक कलाम दूसरे कलाम को मन्सूख कर देता है, मेरी हदीस दूसरी, हदीस को कुरान की तरह मन्सूख कर देती है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १८६)

२५- जो कुरान का सही* मतलब अपनी राय से भी कहे तो गुनाहगार है। (जिल्द १ हदीस नम्बर २१९)

२६- अरब में ७ जुबानें थीं (कुरैश, तई, हवाजन, अहलयमीन, सकैफ, हिजैल, बनीतमीम) कुरान सबसे सख्त जुबान "कुरैश" में उतरा था बाद अजआं इजाजत हो गई कि चाहे जिस लुगत (कोश) में पढ़ो, मगर जब लगेबाहम (आपस में) लड़ने-झगड़ने और एक-दूसरे को काफिर कहने लगे तो हजरत उस्मान ने एक कुरान शरीफ लुगत कुरैश में लिखकर उसकी नकलें जाबजा तकसीम करके बाकी लुगत व कुरान मिटा डाले। अबकारियों (एक साथ कुरान पढ़ने वालों) ने मुततबअव तफतीश करके (अपने विचार से और ढूंढ़कर) सही-सही सनदों और रिवायतों (कहावतों) से उन किरअतों (पाठों) को तहकीक अर्थात् सत्यापित करके लिख दिया है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर २२२ की शरह)

२७- ऐसा जमाना आयेगा कि इस्लाम नाम ही रह जायेगा,

नोट : * समझ में नहीं आता कि सही मतलब कहने पर भी इन्सान गुनाहगार क्यों है? इस दृष्टि से तो जनाब "मिर्जा गुलाम अहमद" साहब जरूर गुनाहगार हैं।

और कुरान की रस्म मात्र ही रह जायेगी।

(जिल्द १ हदीस नम्बर २२२ की शरह)

समीक्षा–ऋषि दयानन्द की कृपा से यह समय बहुत जल्दी नजदीक आ रहा है। शुद्धि का बाजार गर्म हो रहा है। टरकी से मुसलमानी टरक रही है और फारिस से फरार हो रही है।

२८- हजरत ने सुबह की नमाज में कुरान की सूरए रुम पढ़ी, तब किरअत (पाठ) भूल गये। फरमाया कि तुम्हारी वजू ठीक न होने के कारण मैं भूल गया।

(जिल्द १ हदीस नम्बर २७५)

२९- जिबराईल ने वजू और नमाज हजरत को सिखाई।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ३३९)

३०- पहले पचास नमाजें फर्ज (खुदा की आज्ञा से) थी।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४१२)

समीक्षा–यह खुदा की अव्वल दर्जे की भूल थी जो ऐसी असम्भव आज्ञा दी जिसे बाद में घटाकर पांच कर दिया गया, अगर कहीं ऐसा हमेशा के लिए हो जाता तो रात-दिन मुसलमानों को उठक-बैठक करते-करते ही उम्र गुजर जाती।

३१- हजरत ने अपनी बीवी से सम्भोग करने के बाद नहाये हुए तसले के पानी से वजू (नमाज पढ़ने से पूर्व हाथ धोना) किया, हालांकि बीवी जुनवी (सम्भोग कराये हुए) थी। बीवी ने कहा पानी नापाक है, हजरत ने फरमाया–पानी ने तो "सम्भोग"

नहीं कराया*।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४१९)

समीक्षा–यह है मुसलमानों के नबी (रसूल) की पवित्रता! क्या मुसलमान लोग इसी भरोसे पर हिन्दुओं को नापाक कहते हैं?

३२-गुस्ल (स्नान) करने के बाद हजरत गरम अर्थात् कामासक्त होने के लिए आयशा (हजरत की परम प्रिय बीवी) से लिपट जाते थे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४२०)

३३- जहां तस्वीर (चित्र) और कुत्ता हो वहां रहमत का फरिश्ता नहीं आता।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४२४)

समीक्षा–मुसलमानों पर खुदा की रहमत इसलिए ही नहीं होती कि वह अपने पास तस्वीरदार सिक्के रखते हैं। मुसलमान अगर खुदा की रहमत चाहते हैं तो उन्हें तस्वीर वाले सरकारी सिक्के अपने पास नहीं रखने चाहिए, कोरे नादान बन बैठे।

३४-एक कुएं में हैज़ (महावारी) के चिथड़े (कपड़े) और मरे हुए कुत्ते डाले जाते थे लोगों ने हजरत से उसके पानी की बाबत पूछा? तो हजरत ने कहा–"पाक" है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४३८)

समीक्षा–क्यों मुसलमानो! क्या हैज़ के कपड़ों और मरे हुए

---

* भाइयों सोचो? अल्लाह के पैगेम्बर के कितने उच्च और पवित्र विचार थे?
–"प्रकाशक"

कुत्तों का अर्क पानी भी आब-ए-जमजम है? क्या इसी को पाकीजगी (स्वच्छता) कहते हैं?

३५-सिर्फ मिट्टी मल लेने से बरतन पाक (स्वच्छ) हो जाता है, उसे पुनः पानी से धोने की जरूरत नहीं है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४४८)

३६-हजरत के खुश्क लिंग के अग्र भाग अर्थात् सुपारी को आयशा छील डालती थी।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४५४)

३७-जिसका गोश्त खाया जाये उसका पेशाब भी "पाक" है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४७१)

३८-यूहदी हैज़ (महावारी) के वक्त औरतों के पास नहीं जाते थे। हजरत ने हुक्म दिया कि-ज़िना (सम्भोग) के सिवाय सब कुछ करो।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४९८)

३९-जब आयशा हैज़ (मासिक धर्म) से होती थी तो हजरत तहबन्दी (तहमद) बंधवा देते थे और लिपट जाया करते थे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ४९९)

४०- हैज़ के वक्त आयशा बरतन से जहां मुंह लगाकर पानी पीती थी उसी जगह पर मुंह लगाकर हजरत भी पानी पीते थे। हड्डी को भी वहीं चूसते थे जहां पर मुंह लगाकर आयशा चूसती थी।

नोट : यह रिवायत सही मुस्लिम हदीस में भी है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ५००)

४१-हजरत हैज़ (महावारी) की स्थिति में आयशा की गोद में सर रखकर लेटे-लेटे कुरान पढ़ लेते थे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ५०१)

४२-हैज़ में नाफ (नाभि) से ऊपर सब कुछ करना जायज है, अर्थात् चूमना, चाटना आदि।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ५०८)

४३- आयशा हजरत के आगे (पैर लम्बे करके) सोती रहती थी और हजरत नमाज पढ़ लिया करते थे, परन्तु सिजदे के वक्त इशारा करते थे कि ऐ आयशा! अब तो पैर सिकोड़ ले, वह सिकोड़ लेती और हजरत सिजदा कर लेते थे।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ७२८)

४४- नमाज पढ़ते वक्त अगर गधा, सुअर, कुत्ता, मजूसी और यहूदी औरत सामने से गुजर जाये तो नमाज टूट जाती है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ९५५)

४५- हजरत नमाज में (सिज़दे की रवायत) भूल गये।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ९५१, ९५३)

४६- हजरत ने सूरए अनआम में सिजदा किया और आपके साथ मुसलमानों और मुशरिकों (गैर मुस्लिमों) ने जिन्नों और सब लोगों ने सिजदा किया।

नोट : इस रवायत को सही बुखारी में भी नकल किया है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर ९५५)

समीक्षा–मुशरिकों ने सिजदा इसलिये किया कि आपने किरअत (पाठ) में अल्लाह बरतर की तारीफ पढ़ी थी। शैतान ने आपकी आवाज में अपनी आवाज मिलाकर तुकबन्दी करके बुतों की तारीफ कर दी, इस वास्ते मुशरिक भी बुतों का नाम सुनकर सिजदे में गिर पड़े।

(जिल्द १ सफा २३७)

४७- रसूल ने फरमाया कि कयामत के दिन खुदा कहेगा कि–**मैं बीमार प्यासा और भूखा था मेरी खबर भी नहीं ली।**

(जिल्द १ सफा ३३८ हदीस नम्बर १४१५)

नोट : सही मुस्लिम में भी इस हदीस को बयान किया है।

४८- आयशा फरमाती है कि जैसी तकलीफ मरते वक्त मैंने आलीजाँ हजरत को होते देखी उतनी ज्यादा किसी को होते नहीं देखी।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १४६६)

४९-आयशा फरमाती है कि हजरत ने मेरे सीने और गर्दन के दरम्यान वफात पाई अर्थात् प्राण छोड़े। बुखारी में भी रिवायत (पाठ) मौजूद है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १४४७)

५०- ताऊन में मरना शहादत (वीरगति पाना) है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १४५२)

५१- फरिश्ते इसी तरह कहते रहेंगे, जब तक वह उस आसमान तक न पहुंच जायेगा, जिस सातवें आसमान पर अल्लाह विराजमान है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १५३२)

५२- मोमिनों (मुसलमानों) की रूहें सब्ज जानवरों के कालिबों में होगा, जो जन्नत के बागों के मेवे खाते होंगे, ऐसी खुदा ने वही (सन्देश) भेजा, और इब्नमाजा ने भी ऐसी रिवायत की है।

(जिल्द १ सफा ३८५ हदीस नम्बर १५३८, १५३९)

५३- अच्छी कुरबानी सींगों वाला दुम्बा अर्थात् बकरा है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १५४८)

५४- पक्की कबर या उस पर मकान न बनाओ।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६००)

५५- पक्की कबर बनाना या उस पर लिखना मना है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६११)

समीक्षा-आजकल सभी कब्रिस्तानों में देख लो क्या हो रहा है? क्या ये खुदा का या अपने बड़े बुजुर्गों का कहना माना जा रहा है?

५६- जिस मुसलमान के तीन बच्चे मर जायें वह दोजख में नहीं जायेगा। हां, कसम पूरी करने को चला जायेगा।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६३१)

समीक्षा-वह दोजख में नहीं जायेगा, हां खुद की कसम पूरी करने को चला जायेगा। खुद ने जोश में आकर कह दिया है, **"तुम एक बार दोजख में जरूर जाओगे चाहे तकलीफ पहुंचे या नहीं।"**

५७-हजरत की मां की मगफरत (सद्गति) नहीं हुई।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६५६)

समीक्षा–हजरत की मां काफिर थी, इसलिए नरक में है।

५८- आयशा आँ हजरत और अबूबकर की कबर पर बिना कपड़े पहने अर्थात् बदन पर पूरे कपड़े बिना पहने ही चली जाती थी और कहती थी–"**खाविन्द और बाप ही तो हैं शर्म किससे करूं?**"

(जिल्द १ हदीस नम्बर १६७३)

समीक्षा–विधवा होने के समय आयशा १८ बरस की थी यह उक्त घटना उसके बाद की है, आप सभी विचार करें कि क्या इस उमर में पूरे कपड़े न पहनकर अर्थात् नंगे बदन कबर पर जाना ठीक था? या ऐसी अर्धनग्न स्थिति में जाने पर अधिक शबाब मिलता था? भाइयों! इसे तो सभी मुसलमानों की माँ हज़रत आयशा ही ज्यादा बेहतर जानती होंगी।

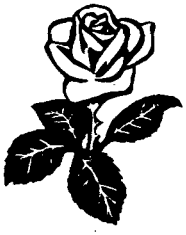

५९-कुरान पढ़ने वालों की गवाही देने, कयामत के दिन, कुरान सिफारिशी बनकर आयेगा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ३३९)

६०-"**कयामत**" के दिन कुरान झगड़ेगा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ३५०)

६१-खाल में लपेटकर कुरान आग में डाल दिया जाये तो खाल नहीं जलेगी।

नोट : दारमी में भी लिखा है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ३५८)

समीक्षा—आपकी खाल में अगर ऐसी ही करामात है तो आजमा कर देखो, इनकी करामात की पोल खुल जायेगी और अल्लाह ताला भी बैठा-बैठा देखता रह जायेगा।

६२-जमीन और आसमान पैदा करने से १ हजार बरस पहले सूरए त्वाहा और सुरये यासीन पढ़ी गई।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ३६६)

६३-"**सूरए रहमान**" कुरान की "**दुलहिन**" (बीवी) है।

नोट : "**सूरए फातेहा**" कुरान की "**जान**" (आत्मा) है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ३९७)

६४-कुरान हिफज (कंठस्थ) करो वर्ना ऊँट से ज्यादा भागने वाला है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४०४)

६५-खुदा ने कुरान सुनने को कान लगाया।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४६०)

६६-"बिस्मिल्लाह" सबसे आखिर में नाजिल (उतरी) हुई, सूरतों की हद कायम करने के लिए। (अर्थात् इसके बाद कोई भी आयत अल्लाह ने मौहम्मद साहब के द्वारा नहीं उतारी)

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४३५)

६७-जंगयमामा के बाद जैदबिनसाबित ने मौ० उमर के कहने पर कुरान ऊँट की हड्डियों और पत्तों पर से जमा (एकत्रित) किया।

यह भी कहा कि जिस काम को तुम करते हो वह आली जाँ हजरत ने नहीं किया।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४३७)

नोट : यह रिवायत सही बुखारी में भी लिखी है।

समीक्षा—क्योंकि अगर कुरान लोगों की जुबान पर ही रहता तो जब सारे सहाबी (जो हजरत की जिन्दगी में हजरत के जरिये मुसलमान बनें) मर जाते तो कुरान दुनिया से उठ जाता।

६८-अन्सबिनमलिक रिवायत करते हैं कि हजीफाबिनयमान

ने हजरत उस्मान से अर्ज किया कि यह हलीफा जंग फतेह आरमेनिया में अहले शाम से, और जंग आजरबेजान में ईराक वालों से लड़े थे। हजीफा, लोगों के किरअत (पाठ) में इख्तलाफ (भेद) देखकर घबड़ा गये और हजरत उस्मान से अर्ज किया कि–**"ऐ अमीरुल-मोमिनीन! इस उम्मत को इससे पहले संभाल लीजिये कि वह यहूद और नसारा (यहूदी और ईसाइयों) की तरह अपनी किताबों में इख्तलाफ (पाठ-भेद) करने लगे।"** हजरत उस्मान ने एक आदमी को हजरत मौहतरमा हफसा (मुहम्मद साहब की बीवी) के पास भेजा और कहा कि–**"हमारे पास कुरान शरीफ भेज दो ताकि (हम उसके मुआफिक) तमाम कुरान को लिख लें, फिर तुम्हारा कुरान तुमको वापिस कर देंगे।"** हजरत मौहतरमा हफसा ने अपना कुरान शरीफ हजरत उस्मान के पास भेज दिया। हजरत उस्मान ने जैदबिनसाबित और अब्दुल्लाबिनजुवैर और सईदबिनमैसब और अब्दुल्लाबिनहशाम को हुक्म दिया कि कुरान सही करो, उन्होंने सब कुरानों में तशरीह (ठीक-ठीक शुद्धि) कर दी।

हजरत उस्मान ने तीनों कुरैशियों से कह दिया था कि जब तुम्हारा और जैद बिन साबित वाली कुरान की किसी किरअत (पाठ) में इख्तलाफ (पाठ-भेद) हो, तो उसे कुरैश की ज़ुबान में लिखना, क्योंकि कुरान शरीफ सिर्फ कुरैश की ज़ुबान अर्थात् अरबी में उतरा है, और सब ही ने ऐसा ही किया। जब तमाम कुरान हजरत हफसा के कुरान के मुआफिक लिख चुके, तो हजरत उस्मान ने हजरत हफसा का कुरान वापिस कर दिया,

और हर तरफ उनका लिखा हुआ कुरान भेज दिया और तब उनके अलावा अन्य कुरानों को जला देने का हुक्म दिया। **"हदीस बुखारी में भी लिखा है।"**

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४३८)

६९-**इब्नअब्बास फरमाते हैं**-मैंने हजरत उस्मान से पूछा, कि इस बात की तुमको किसने जुर्रत दी कि सूरए अनफाल जो वह सात सूरतें जो कुरान में सबसे श्रेष्ठ कहाती हैं, सब अमसानी में से हैं, और सूरए बारात जो सौ आयतों वाली सूरतों में से है, तुमने दोनों को मिला दिया और उनके बीच में बिस्मिल्लाह की सतर नहीं लिखी, और तुमने सूरतों को सात तवील सूरतों में रख दिया तुम्हें इसकी जुर्रत क्योंकर आ गई?

हजरत उस्मान बोले-रसूलल्लाह सल्लेलाअलैहवसल्लम के जमाने में कितनी आयतें अर्थात् कितनी आयतों वाली सूरतें उतरी थीं? जब आप पर कोई आयत उतरती तो फरमाते-दूसरे उस सूरत में लिख दो जिसमें यह जिक्र किया गया है, और सूरए अनफाल मदीने में सबसे पहले नाजिल हुई थी और सूरए बारात सारे कुरान के पीछे उतरी थी, और इसका किस्सा सूरए अनफाल के किस्से के मुआफिक उतरा था। रसूल का इन्तकाल हो गया और आपने हमसे बयान तक नहीं किया कि सूरए बारात भी सूरए अनफाल में शामिल है या नहीं? इस वास्ते मैंने इन दोनों को मिला दिया है और बिस्मिल्लाह की सतर छोड़ दी है और उसे सात लम्बी-लम्बी सूरतों में रख दिया है* यह हदीस इमाम

* इस सम्बन्ध में "कुरान में परिवर्तन" नामक पुस्तक को पढ़ें। "सम्पादक"

गुरु विरजानन्द सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5315
दयानन्द महिला म.

अहमद तिरमिजी और अबू दाऊद ने रिवायत की है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४३९)

७०-अल्लाह का कहना है कि—जो मेरे पास पा प्यादा चल के आवेगा, मैं उसके पास दौड़ता हुआ जाऊँगा। मुस्लिम हदीस में है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४७९)

७१-अल्लाह फरमाते हैं—और जब मैं किसी को अपना दोस्त बना लेता हूं तो उसका कान, जिससे वह सुनता है, मैं ही होता हूं, और जिस आंख से वह देखता है वह भी मैं ही होता हूं, और उसका हाथ जिससे वह छूता है मैं ही होता हूं और उसका पांव जिससे वह चलता है मैं ही होता हूं बुखारी ने पहल किया।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४८०)

७२-अल्लाह फरिश्तों से पूछता है कि मेरे बन्दे क्या कर रहे है? फरिश्तों! तुम कहां से चले आ रहे हो?

(जिल्द २ हदीस नम्बर ४८१)

७३-अल्लाह के ९९ नाम हैं।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५००)

७४-इंसान ने ९९ कतल किये, उसने एक शख्स से दरयाफ्त किया कि मेरी तोबा कुबूल होगी या नहीं? उसने कहा—नहीं। उसने उसको भी मार डाला। फिर वह दरयाफ्त करने को दूसरी बस्ती की ओर चला। रास्ते में इत्तिफाक से वह मर गया, दोजख और जन्नत दोनों ही के फरिश्ते उसको लेने को आये। बहिश्त

के फरिश्ते कहते थे हम इसको जन्नत में ले जायेंगे। दोजख के फरिश्ते उसको दोजख में ले जाना चाहते थे। दोनों जगहों के फरिश्तों में आपस में खींचातानी होने लगी। हजरत जिब्राईल ने यह फैसला किया कि जमीन को नापा जाये कि यह जहां से चला था वहां से मरने वाली जगह नजदीक थी या वह बस्ती जहां वह जाना चाहता था? नापते वक्त खुदा ने हुक्म दिया कि ऐ जमीन! तू खिंचकर मरने की जगह को बस्ती के नजदीक कर दे। बस! नापने पर वह बस्ती मरने की जगह से नजदीक हो गई।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५४०)

७५-अगर तुम बिल्कुल गुनाह करना छोड़ दो तो अल्लाह तुमको बिलकुल नेस्तनाबूद (बर्बाद) करके (तुम्हारी जगह) ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो गुनाह करें। सही मुसलिम में है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५४१)

७६-अल्लाह रात-दिन के शुरू व आखिर में हाथ फैलाता है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५४२)

७७-इंसान बार-बार गुनाह करता है, तौबा* कर लेने पर खुदा बख्श देता है, जितनी मरतबा करे बराबर बख्शता रहेगा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५४६)

---

*किसी ने ठीक ही कहा है–

रात को मय पिये सुबह "तौबा" कर ली।
रिन्द के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गई॥

–"हिजबुल्ला"

७८-बनी इसराईल में दो आदमी दोस्त थे–एक गुनाहगार और एक आबिद (भक्त) दोनों की रूह खुदा ने कब्ज (जान निकलवाई) कराई। आबिद को दोजख में भेज दिया और गुनाहगार को जन्नत में भेज दिया।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५५९)

७९-जो बहुत गुनाह करके तौबा करता है वह अल्लाह का दोस्त है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५७१)

समीक्षा–हजरत जिब्राईल मक्खी की तरह भिनभिनाते थे।

८०-मुशरिक अर्थात् काफिर भी खुदा को लाशरीक मानते थे बुतों का मालिक खुदा को मानते थे। सही मुस्लिम में भी मौजूद है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ७५७)

८१-"संगअसवद"[२] की दो आंखें होंगी, और जुबान भी होगी जो कयामत के दिन गवाही देगा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ५८१)

८२-काबे का तवाफ (परिक्रमा) करना और नमाज बराबर है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ७७९)

---

२. मक्के के मन्दिर में एक काले रंग का पत्थर अर्थात् "शिवलिंग" मौजूद है। जिसे "संगअसवद" कहते हैं, जिसका हज़ करते समय प्रत्येक मुसलमान बोसा (चुम्बन) लेता है। जिसे अल्लाह का प्रतीक माना जाता है, इसके चुम्बन से अल्लाह हाजी के सारे गुनाह माफ कर देता है।

–"सम्पादक"

८३-अरफे के दिन अल्लाह दुनिया में आसमान की तरफ उतरता है, अल्लाह फखर करता है। फरिश्तों के लिए गवाह ठहरता है।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ८०२)

८४-हज़रत ने क़ुरबानियों की ऊँटनियों के गले में जूतियों का हार डाल दिया। जमाने जहालत की इस रस्म को हजरत ने बरकरार रक्खा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ८२२)

८५-हज के वक्त "मिना" नामक मुकाम पर हजरत ने सिर मुंडाया और फरमाया कि इन बालों को बांट दो।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ८५०)

८६-अहराम (हज की खास तैय्यारी) में औरत मुंह पर नकाब न डाले।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ८७७)

८७-मक्के की ईंट-ईंट को एक "हश्शी" अलग करेगा।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ९१९, ९२०)

८८-मेरी कब्र की जियारत अर्थात् परिक्रमा मेरी जिन्दगी में जियारत के मानिन्द (बराबर) है, ऐसा हजरत ने फरमाया।

(जिल्द २ हदीस नम्बर ९५२)

समीक्षा—कबरपरस्ती की शिक्षा हजरत खुद ही दे गये हैं, मरने के बाद भी अपनी कबर पुजवाना बता गये।

"मिश्कात की सैर" जिल्द-३

८९-विधवा की निस्वत अर्थात् बजाय क्वांरी से शादी करना अच्छा है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ९)

९०-ज्यादा (औलाद) जनने वाली औरतों से निकाह करना चाहिए।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १२)

९१-रसूल ने कहा क्वांरियों से शादी किया करो, वह शीर्ष दहन (मीठी बोलने वाली) होती है थोड़े (रिजक व महर) में ही राजी हो जाती है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १३)

९२-वह निकाह सबसे अच्छा होता है जिसमें रोटी, कपड़ा, मकान और महर कम हो।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १८)

९३-अबूहरेरा, फरमाते हैं कि—एक आदमी ने आकर नबी से अर्ज किया कि मेरा एक अंसारी औरत से निकाह करने का इरादा है। आपने फरमाया—तू उसे देख ले, क्योंकि अंसारियों की आंखों में कुछ नुक्स होता है। यानी कञ्जी आंखें होती हैं। यह हदीस मुस्लिम ने रिवायत की है।

(जिल्द ३ फसल-हदीस नम्बर १९)

समीक्षा–मुसलमानों! अब मनु महाराज की बताई हुई बिलियारी यानी कञ्जी आंखों की निन्दा पर आक्षेप न करना।

९४-औरत शैतान की शक्ल में सामने आती है, गैर औरत को देखकर अपनी औरत से सम्भोग करे। यह रिवायत मुस्लिम हदीस में भी है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर २६)

समीक्षा–अगर अपनी औरत न हो तो फिर कहां कूदे? अर्थात् कहां पर अपना दिमागी बुखार उतारे? हजरत को चाहिये था कि इसका भी कोई रास्ता निकालते।

९५-रसूल ने गैर औरत को देखकर अपनी बीवी **"सौदा"** से भोग किया। यारों से भी वैसा ही करने को कहा, अर्थात् जैसे खुद में वैसी ही शिक्षा अपने अनुयायियों को दी, वाह! हजरत आपके भी क्या कहने?

(जिल्द ३ हदीस नम्बर २९)

९६-हजरत आयशा (मौ. साहब की सर्वप्रिय बीवी) शादी के वक्त छः साल की थी, सम्भोग के समय आठ साल की थी, १८वें साल में बेवा (विधवा) हो गई ऐसा सही मुस्लिम (हदीस) में दर्ज है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ५०)

९७-जिसके यहां बच्चा पैदा हो, नाम अच्छा धरे।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ५८)

९८-हजरत ने "मुता" करने का ३ दफा हुक्म दिया।

(सही मुस्लिम जिल्द ३ हदीस नम्बर ६८)

९९-हम "जिहाद" करते थे हजरत ने "मुता" का हुक्म दिया।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ७७)

१००-इस्लाम के आरम्भ में मुता जायज था।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ७८)

१०१-उज्ल ३ जायज है, हजरत ने मना नहीं किया।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १०१)

समीक्षा–"उज्ल" बड़ा ही घृणित कर्म है, जिसे लिखते हुए भी शर्म आती है।

१०२-हजरत मरते वक्त यही कहते थे (पूछते थे) कि कल से कहां रहूंगा? यानी आयशा के घर रहने की बारी कब आयेगी? यह हदीस सही बुखारी में है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १४८)

१०३-हजरत ने सौदा (अपनी स्त्री) को तलाक देनी चाही तब उन्होंने अपनी बारी हजरत आयशा को दे दी।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १५०)

१०४-औरत आदमी की बायीं पसली से पैदा हुई थी।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १५१)

१०५-हजरत अपनी बीवी आयशा के साथ शर्त लगाकर दौड़े। आयशा आगे निकल गई।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १६०)

१०६-आयशा की गुड़िया ताक में धरी रहती थी, उनमें एक परदार घोड़ा भी था।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १८१)

१०७-तलाक से बुरी चीज दुनिया में कोई नहीं।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर २०८)

१०८-तीन जुर्मों में मुसलमान कत्ल के काबिल होता है।

१. किसी को मार डालने वाला।

२. ब्याहा हुआ ज़िना (व्यभिचार) करे।

३. मुरतिद हो (मुसलमान होकर काफिर हो जाये)

(जिल्द ३ फसल-१ हदीस नम्बर २५४)

१०९-कुछ आदमी हजरत के पास आकर मुसलमान हो गये, आपने फरमाया ऊँट का पेशाब पियो उन्होंने नहीं पिया और वह फिर काफिर हो गये। हजरत ने उनके हाथ-पांव कटवा लिये, आंखों में गर्म सिलाई फिरवा दी, पानी तक पीने को नहीं दिया।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ४३९)

११०- कुरान में पहले संगसारी की आयत थी। बुखारी और

मुस्लिम में लिखा है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ४४६)

समीक्षा–(संगसारी-पत्थरों से मार डालना) परन्तु अब वह आयत कुरान में से निकाल डाली गई है।

१११-रसूल ने फरमाया कि मुझे डर है कि कहीं मेरी उम्मत (मुसलमान लोग) लवालत (जहालत) में न फंस जावे। तिरमिजी और इब्नमाजा में है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ४७६)

११२-जो चौपायों से काला मुंह (संभोग) करे उसको कोई सजा न दी जावे।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ४८४)

११३-रसूल को औरतों के बाद घोड़े प्यारे थे।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर ७६९)

११४-हसन जब पैदा हुए तो हजरत ने कान में अजान कही।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १०३३)

११५-एक औरत मदीने में खतना किया करती थी, हजरत ने कहा खाल लिंग के ऊपर से थोड़ी काटा कर इससे औरत और मर्द को (सम्भोग करते समय) ज्यादा मजा आता है।

(जिल्द ३ हदीस नम्बर १३२०)

११६-बुखार दोजख की भाप है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२)

११७-अगर हकीम कहे कि शराब ही इस मर्ज की दवा है तो जायज है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २५)

११८-हजरत अच्छे नाम को पसंद करते थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ६६)

११९-जब आप किसी आमिल (कर्मकाण्डी) को भेजते तो उसका नाम पूछते। अगर उसका नाम आपको अच्छा मालूम होता तो आप खुश हो जाते थे और खुशी उसकी आपके चेहरे पर मालूम हो जाती थी। और अगर नाम उसका आपको बुरा मालूम होता तो बुराई उसकी आपके चेहरे पर मालूम हो जाती। किसी बस्ती का नाम भी अगर अच्छा होता, तो आप खुश होते, वरना नाराज होते।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ७१)

समीक्षा– इससे मालूम होता है कि अपने बेटे और खादिम (नौकर) के लिए अच्छा नाम रखना सुन्नत है। बुरे नाम कभी तकदीर के मुआफिक हो जाते हैं। जैसे कि किसी ने अपने बेटे का नाम नुकसान वगैरा रख लिया, ऐसा होने पर इत्तिफाक से उसको नुकसान हो गया तो सब लोग यही जानेंगे कि इसी की

वजह से नुकसान हुआ है और उसको मनहूस समझकर उससे किनाराकशी करेंगे। लिहाजा उससे बचना चाहिए।

नोट : रसूल की राय को **"सुन्नत"** कहते हैं। उनका (कार्य-कलाप) अमल भी सुन्नत कहलाता है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १७)

१२०-खुदा का कोई हुक्म होता है तो फरिश्ते पर मारते हैं। गोया पत्थर पर जंजीर की आवाज होती है। बुखारी में भी ऐसा ही लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ८४)

१२१-तारा छूटना जिन्नात को मारना है। हदीस मुस्लिम में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ८५)

१२२-सितारों को तीन बातों के लिए पैदा किया है।

१. आसमान की जन्नत के लिए।

२. शैतान को मारने के लिए।

३. निशानी के वास्ते जिससे इन्सान रास्ता मालूम करते हैं। इसके सिवा जो बयान करेगा, बस खता करेगा। इसको बुखारी ने कहा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ८६)

१२३-अल्लाह के दोनों हाथ बन्द थे। आदम ने अपने बेटे

दाऊद को अपनी उम्र में से ६० साल दिये थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १४३)

१२४-अपने बच्चे का यसार, रबाह, बखीह, फलह और नाफा नाम न रक्खो तथा "शाहजहां" नाम हदीस में मौजूद नहीं है इसलिए नहीं रखना चाहिए। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २३)

१२५-हजरत ने "बर्र:" नाम से "जैनब"[१] नाम बदल दिये "बर्र:" नेकबख्त को कहते हैं। मुस्लिम में कहा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २३)

१२६-"बर्र:" से "जवेरियो" नाम रख दिया। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २३)

१२७-"आसिया" का नाम "जमीला"[२] रख दिया। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २३)

१२८-एक लड़के का नाम बदलकर "मच्वर" रख दिया इस हदीस को सबने माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २३)

१२९- हजरत ने बजाय "अब्बुल हुक्म" के "अब्बुल

---

१. हजरत मौहम्मद साहब की चौथी बीवी का नाम था।

२. "जमीला" हजरत के द्वारा युद्ध में प्राप्त माल के साथ प्राप्त हुई थी। जो हजरत के पास "रखेल" के रूप में मौजूद थी। -सम्पादक

शरी'' नाम रख दिया।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २४)

१३०-हजरत बुरे नाम को बदल देते थे। ऐसा तिरमिजी में लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २५)

१३१-हजरत ने ''अहरम'' से ''जरआ'' नाम बदला। ''आ'' ''अजीस'' ''अतला'' ''शैतान'' ''हकम'' ''उजाब'' और ''सबाब'' ना में बदल दिये। इब्न दाउद में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २)

समीक्षा–''अहरम'' के मानी कांटे हैं। ''जरआ'' खेती को कहते हैं।

१३२-मुनाफिक (ऊपर से मुसलमान भीतर से काफिर) सरदार भी हो, तो उसको सरदार मत कहो।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २५७)

समीक्षा–देखिये! मुसलमान को गैर मुस्लिमों से कितनी नफरत है? अगर ये लोग महात्मा गांधी की निंदा करें और उनको महात्मा न कहें तो क्या आश्चर्य है?

१३३-हजरत ने एक शख्स का नाम ''हज्न'' से ''सहल'' धरा, ऐसा सही बुखारी में लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २५८)

समीक्षा–''हज्न'' ने मानी सख्त, जमीन व गम के है। ''सहल'' माने नर्म के है।

१३४-हजरत ने फरमाया कि नाम अम्बिया (नबियों) के नाम पर रक्खा करो। सबसे अच्छे नाम अब्दुल्ला और अब्दुर्रहमान हैं। सब में सच्चे नाम 'हारेस' और 'हम्माम' है। सबसे बुरे नाम 'हरब' और 'मर्रः' है जिनके मानी लड़ाई और तलखी है। अबूदाऊद से नकल है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २५९)

समीक्षा–"हारस" के मानी कमाने वाला और "हम्माम" के मानी कस्द करने वाले के हैं।

१३५-काफिरों की हिजो (निन्दा) शेर बनाकर करो। हजरत ऐसा शायरों (कवियों) से फरमाते थे। मुस्लिम हदीस में भी ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर २६७)

१३६-पीर (सोमवार) और जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन बच्चों के आमाल (कर्म) अल्लाह के सामने पेश किये जाते हैं। हदीस मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ४९५)

नोट : नवाबों की तरह अल्लाह के सामने मिसलें पेश होती हैं, बहुत खूब।

१३७-हजरत आपस में सुलह कराते वक्त और जंग में झूठ बोलते थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ४९६)

समीक्षा–हदीस नम्बर ४९६–जंग में मुसलमानों को कुब्बत देने के लिए और दुश्मन को फरेब में लाने के लिए झूठ बोलना जायज है।

१३८-रसूल फरमाते थे कि ३ तीन जगह झूठ बोले–

१. अपनी बीवी को राजी करने के लिए।

२. ज़िहाद (लड़ाई) में।

३. सुलह कराने में।

हदीस तिरमिजी में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ४९७)

१३९-खुदा ने अक्ल को पैदा करके कहा–उठ, बैठ, पीछे हट, आगे बढ़ वगैरह। तुमसे बेहतर कोई नहीं।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ५२८)

समीक्षा–फिर न जाने मुसलमान लोग बुद्धि से काम क्यों नहीं लेते? अक्ल को खुदा ने मुजस्सिम (शरीरधारी) पैदा किया है जैसे कि मौत को। मौत कयामत के बाद हलाल कर दी जायेगी मेढ़े की शक्ल में। (खूब अक्ल से काम लिया? क्या कहने हैं?)

१४०-अल्लाह कहता है–बड़ाई मेरी चादर है, बुजुरगी मेरा तहबन्द है, छीनने वालों को दोजख में भेजूँगा। सही मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ५६९)

१४१-काफिरों को उन आमाल (कर्मों) के बदले जो वह दुनिया में करते हैं रिज़क (अन्न-जल) दिया जाता है, जब वह आखिरत में (कयामत के दिन इन्साफ के लिए) पहुंचेंगे, तो

उनकी कोई नेकी न होगी, जिसकी उन्हें जजा (अच्छा फल) दिया जावे। सही मुस्लिम में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ६१८)

१४२-हजरत "आयशा"[१] फ़रमाती है कि हज़रत को तीन चीजें बहुत प्यारी थीं–१. औरतें २. खुश्बू और ३. खाना।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ७२५)

१४३-हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की उमर ६० से ७० साल तक होगी। इससे ज्यादा के बहुत कम होंगे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ७४४)

१४४-मैंने सारे बन्दे बातिल (असत्य) से फिरे हुए पैदा किये थे, शैतान ने आकर उनको उनके दीन से फेर दिया। हदीस मुस्लिम में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ८२४)

१४५-सूरज छिपते वक्त अर्श (आसमान) के नीचे खुदा को सिजदा करता है, सूरज की करारगाह (ठहरने का स्थान) अर्श आसमान के नीचे है। मुस्लिम में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९१९)

१४६-मसीह मौयूद (मरियम के बेटे) जमीन पर उतरेंगे, निकाह करेंगे, औलाद उनके होगी, ४५ वर्ष तक दुनिया में रहेंगे, फिर मर जायेंगे। ईसा–मरियम के बेटे, अबूबकर और उमर के बीच में मक़बरे से उठेंगे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९९५)

---

१. हजरत की सर्वप्रिय बीवी।

१४७-कयामत सौ बरस के अन्दर आ जायेगी।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९५१, ९६२, ९६३)

१४८-मैं कयामत (प्रलय) के इब्तदा (आरम्भ) में गया हूँ पांच सौ बरस के बाद कयामत आयेगी।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९६४, ९६५)

१४९-कयामत, अल्लाह-अल्लाह करने वालों पर नहीं होगी। बुरे लोगों पर होगी।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९६७, ९६८)

समीक्षा—यह कौन-सी फिलासफी है?

१५०-कयामत के दिन खुदा जमीन को मुट्ठी में ले लेगा। और आसमानों को दायें हाथ में लपेट लेगा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९७३, ९७४)

१५१-खुदा कयामत के दिन आसमान, जमीन, पानी, दरख्त, पहाड़ों और रहतुस्सराय (जमीन के नीचे के लोक) वगैरह को एक अँगुली पर रखकर घुमायेगा। कुरान में भी ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९७५)

१५२-कयामत के दिन तुम नंगे पांव, नंगे बदन, बे खतना[१] किये हुए उठोगे। जैसे अव्वल दफा पैदा किया है वैसे ही दुबारा पैदा (पुनर्जन्म) करेंगे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९८६)

---

१. भगवान की कृति में परिवर्तन करना तभी सही था अगर पुनः भी खतना (लिंग कटे हुए) किये हुए ही पैदा होते। जबकि आश्चर्य की बात है कि मुस्लिम देशों में स्त्रियों की भी खतना की जाती है? —"सम्पादक"

समीक्षा—यह पुनर्जन्म नहीं है तो और क्या है?

१५३-हजरत आयशा फ़रमाती है कि रसूल ने फरमाया कि कयामत के दिन सब मर्द और औरतें नंगे पांव, नंगे बदन और बेखतना जमा होंगे। एक-दूसरे को देखेंगे? मैंने पूछा—बेपर्दा होंगे? रसूल ने कहा—बहुत सख्त हाल होगा। यह हदीस सबने मानी है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९८७)

१५४-कयामत के दिन इतना पसीना आयेगा कि जमीन पर सत्तर गज (पानी) चढ़ जायेगा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ९९०)

१५५-कयामत के दिन आज़ा (शरीर के सभी अंग) गवाही देंगे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०१०)

समीक्षा—स्त्री-पुरुषों के सारे ही अंग गवाही देंगे, व्यभिचारिणी स्त्रियों के भी तो अंग गवाही देंगे। उसी तरह लखनऊ के चौक बाजार की रण्डियों और गिलमों अर्थात् गौरे-चिट्टे लड़कों के भी सारे अंग गवाही देंगे। अच्छे ग्रामोफोन बजेंगे? रिकार्ड भी तरह-तरह के सुरों के चढ़े होंगे! अजीब लुत्फ होगा!! वाह-वाह!!!

१५६-कयामत के दिन गिरोह बनाकर हर उम्मत के लोग अपने-अपने नबी के पास जायेंगे और कहेंगे कि हमको खुदा से कहकर बख्शवाइये। सारे ही नबी अपने को गुनाहगार कहकर हज़रत मुहम्मद साहब के पास भेज देंगे और कहेंगे कि मुहम्मद के अगले-पिछले सब ही गुनाह खुदा ने माफ कर दिये हैं वही तुमको भी बख्शवा देंगे। यह हदीस सबने मानी है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०२०)

१५७-रसूल कहते हैं कि मैं इसलिए हँसा कि उस वक्त खुदा को हँसी आ गई थी। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०२९)

१५८-दोजख और जन्नत के बीच में मौत हलाल (कत्ल) कर दी जायेगी। यह देखकर जन्नती खुश होंगे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०३७)

१५९-मुक़ाम महमूद-जिस दिन खुदा अपनी कुर्सी पर नजूल फ़रमायेगा (उतरेगा) वह (कुर्सी) इस तरह बोलेगी जिस तरह नई काठी तंग होने की वजह से बोलती है। दारमी में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०४२)

१६०- जन्नती (जन्नत को जाने वाले मुसलमान) पाख़ाना व पेशाब न करेंगे बल्कि मुंह से डकार मारने से तथा नीचे गुदा द्वारा पाद मारने से और पसीने से ही काम चल जायेगा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०६४, १०६५)

समीक्षा-अच्छा जन्नत होगा जिसमें पाख़ाने की बदबू मुँह की राह डकार द्वारा और गन्दी हवा (पाद) गुदा द्वारा निकलेगा; और पेशाब पसीना बनकर जिस्म के हर हिस्से से निकलेगा? यह जन्नत मुस्लिमों को ही मुबारक रहे।

१६१- जैंहा, सैहां, नील, फ़रात आदि नदियाँ ये सब जन्नत की नहरों में से आती-जाती हैं, ऐसा मुस्लिम हदीस में दर्ज है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०७१)

१६२-जन्नत की हूरें ७० जोड़े (पोशाकें) पहने होंगी, फिर भी पिण्डलियाँ चमकेंगी।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०७८)

१६३-जन्नत में ८० हज़ार ख़िदमतगार और ७२ बीवियां होंगी। औलाद चाहेगा, तो फौरन् हमल (गर्भ) होगा और उसी दम पैदा होकर बड़ी हो जायेगी।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १०९१)

१६४-रसूल ने हज़रत जिब्रील को दो दफ़ा असली सूरत में देखा। जिब्रील के छः सौ पर (पंख) थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११०३)

१६५-जन्नती देखेंगे कि उनका परवरदिगार उनको ऊपर से देख रहा या झांक रहा है। फिर वह परदे में हो जायेगा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११०५)

१६६-हजरत ने जिब्रील के छः सौ पर देखे! सबने इसको माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११०५)

१६७-दोज़ख हाजिर की जायेगी। सत्तर हज़ार लगामें लगी होंगी। हर लगाम को ७० हज़ार फ़रिश्ते थामे होंगे। सही मुस्लिम ने कहा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११०७)

१६८-चाँद और सूरज दो पनीर के टुकड़े हैं। कयामत के दिन दोनों दोजख में डाल दिये जायेंगे। हसन ने पूछा कि किस

गुनाह में? अबूहुरैरा ने कहा कि हज़रत ने कहा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १११३)

१६९-अल्लाह अपना पांव दोज़ख में रखेगा। बहिश्त के वास्ते एक नई मख़लूक पैदा करेगा। इस हदीस को सबने माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११३५)

१७०-दोज़ख में हमेशा कुछ-न-कुछ पड़ता रहेगा और वह कहता रहेगा कि "हल्मिन मजीदिन्"[१] कुछ और है? अल्लाह अपना कदम रख देगा बहिश्त में, खाली मकान पड़े रहेंगे, अल्लाह उसके लिए नई मख़लूक पैदा करेगा। इस हदीस को सब मानते हैं।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११३६)

१७१-खुदा का तख्त पानी पर था। सही बुखारी में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११३९)

१७२-पैदायश से पेश्तर (पहले) एक किताब (खूब, जो कुछ होना है वह पहले ही लिख लिया था) में लिख लिया था।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११४१)

१७३-हज़रत इब्राहीम ने ८० बरस की उम्र में अपना ख़तना अपने हाथ से बसूले के द्वारा किया। यह हदीस सबने मानी है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११४४)

---

१. सेवा करने वाले जन्नत में मिलेंगे, यह बात तो समझ में आती है परन्तु ७२ बीवियाँ होंगी यह बात कुछ समझ से बाहर है! क्या एक बीवी से जन्नत में काम नहीं चल सकता? -सम्पादक

१७४-इब्राहीम ने तीन झूठ बोले–(१) औरत को बहन कहा। (२) मैं बीमार हूँ (३) मैंने बुत नहीं तोड़े।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११४५)

१७५-खंजर से जिस लड़के को मारा था, अगर वह ज़िन्दा रहता तो कुफ़्र, अख्तयार करता, अपने बाप को भी काफिर बनाता।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११५१)

१७६-हजरत मूसा ने मौत के फ़रिश्ते को तमाचा मारा, वह काणा हो गया।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११५३)

१७७-इस्लाम में सिर्फ ३ औरतें कामिल हुईं–मरियम फिर उनकी औरत आसिया और आयशा। इस हदीस को सबने माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११६५)

१७८-मख़लूक पैदा करने से पेशतर खुदा "अमा" यानी अंधेरे बादलों के पीछे था।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११६६)

१७९-जिब्रील कहते हैं कि मेरे और खुदा के दरम्यान ७० परदे नूर के हैं। अगर उनमें से किसी के करीब जाऊं, तो जल जाऊं।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११७०)

१८०- रसूल फ़रमाते हैं कि मैं हर एक ज़माने में आदम की औलाद के बहत्तरवें सिलसिले में पैदा होता चला गया हूं। यह हदीस बुखारी ने नकल की है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११७९)

समीक्षा–यानी हर किरन-दौर में अपने बापों की पुश्त में होता था, वह सब ७२ ही होते थे, और जब तक मैं पैदा हुआ इससे ७२ बापों की पुश्तों में रहा हूँ।

१८१-बाजे नबी ऐसे हैं कि उनकी उम्मत में से सिर्फ एक ही ने उनकी तसदीक की है। मुस्लिम ने कहा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११८४)

१८२-हर नबी की ओर से मौजिजे अर्थात् चमत्कार के रूप में मुझे सिर्फ कुरान ही मिला है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर ११८६)

१८३-हज़रत ईसा मुहम्मद साहब के हुज़रे में दफन होंगे। हज़रत के हुज़रे में एक कब्र की जगह खाली है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२१०)

समीक्षा–"अन्नह फ़तहनालक" के मानी लिखते हुए लिखा है कि–ऐ मुहम्मद! तेरे अगले-पिछले गुनाह माफ़ कर दिये। (इससे सिद्ध है कि हज़रत भी पापी थे।)

१८४-हज़रत इब्न अब्बास फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह यह फ़रमाते थे कि मुझ पर कुरबानी फ़र्ज की गई है और तुम पर फ़र्ज नहीं की गई है। दारमी में भी है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२१३)

१८५-हज़रत लड़कों के गालों पर हाथ फेरते थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२२७)

१८६-हज़रत का बेटा इब्राहीम दूध पीता हुआ ही मर गया (अर्थात् छोटी उमर में ही चल बसा)। हज़रत ने फ़रमाया कि उसके लिए जन्नत में दूध पिलाने वाली होगी। हदीस मुस्लिम में ऐसा लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२६९)

१८७-हज़रत गधे पर सवार होते थे। अपना जूता खुद गांठते थे।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२५९ व ६०)

१८८-हज़रत को पत्थर व दरख्त तथा ऊँट आदि सब सलाम करते थे। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२८९)

१८९-हज़रत को पत्थर सलाम करता था। मुस्लिम में है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १२८९)

१९०-हज़रत की जुदाई में मस्जिद का सुतून बच्चे की तरह रोता था। बुखारी में लिखा है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १३३७)

१९१-हज़रत फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत मूसा को छठे आसमान पर देखा वह मुझको देखकर रोने लगे। (इसलिए रोये कि यह मेरे बाद को हुआ। इसकी उम्मत के लोग जन्नत में ज्यादा जायेंगे। और मेरी उम्मत के थोड़े जायेंगे (यह एक प्रकार की जलन है।)

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १३८३)

१९२-हज़रत की मौत, आयशा की सोहबत वाली बारी में, हजरत आयशा के घर, आयशा के सीने पर हुई। बुखारी में लिखा है कि आयशा ने अपनी झूठी दातुन चबाकर हज़रत मुहम्मद के मुंह में मरते वक्त डाली तब कहीं जाकर उनकी जान निकली।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १३९३)

१९३-मौत के वक्त बकरी के गोश्त के ज़हर से हज़रत को तकलीफ होती थी। (जंगे खैबर के वक्त एक औरत ने आपको गोश्त में ज़हर मिला कर खिला दिया था।)

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १३९९)

१९४-हज़रत ने वफात के वक्त काग़ज़; कलम और दावात मंगवाई, उमर ने कहा—इस वक्त हज़रत को मौत की तकलीफ है। (हज़रत वसीअत करना चाहते थे, जिसको उमर ने नहीं होने दिया। इस पर शिया लोग उमर से नाराज हैं। शियों का ख्याल है कि उस वक्त मुहम्मद साहब हज़रत अली को खलीफा बनाते, लेकिन उमर उनका खलीफा होना नहीं चाहते थे)।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १४००)

समीक्षा—हदीस नम्बर १५६३—इब्राहीम हज़रत का लड़का था, जो मारिया कबतिया लौंडी से पैदा हुआ था।

१९५- जैद को, जैद बिन मुहम्मद-मुहम्मद का बेटा, कहते थे। (इस ही की स्त्री जैनब से हज़रत ने निकाह किया था)।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १५७७)

१९६- जन्नत में मरियम-हजरत मसीह की माता, हज़रत मुहम्मद की बीवी होगी।

(हाशिया हदीस नम्बर १६१०)

१९७-हजरत मुहम्मद साहब को जिब्राईल ने तीन दफा आयशा को ख्वाब में, रेशमी कपड़े में लपेट कर दिखाया।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६१४)

नोट–कुछ लोग कहते हैं कि निकाह से पहले आयशा की तस्वीर दिखाई गई।

१९८-हज़रत आयशा के बिस्तर पर ही वह्य (खुदा का हुक्म) आता था। इस हदीस को सबने माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६१५)

१९९-फिर उनकी बीवी 'आयशा' से हज़रत का निकाह जन्नत में होगा।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६१६)

समीक्षा–हदीस नम्बर १६१७–हज़रत को आयशा की सूरत का नक्शा दिखलाया गया, मुसलमानों के मत में जानदार की तस्वीर बनाना हराम है। जिब्राईल ने आयशा की तस्वीर क्यों बनाई? क्या हज़रत जिब्राईल मुसलमानी शरह (कानून) के पाबन्द नहीं थे?

२००-हज़रत के जमाने में चार आदमियों (खलीफाहों) ने कुरान जमा (इकट्ठा) किया था। इस हदीस को सबने माना है।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६३०)

२०१- 'साद बिन मआज़ के मरने से रहमान-अल्लाह तआला का अर्श (आसमान) पर रक्खा तख़्त हिल गया।

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६३२)

२०२-जाबिर के बाप से अल्लाह ने बिना परदे के मुंह दर मुंह अर्थात् आमने-सामने गुफ़्तगू अर्थात् बातचीत की। (तिरमिज़ी मे नकल किया गया है।)

(जिल्द ४ हदीस नम्बर १६७२)

२०३-अर्श (आसमान) खुशी के मारे हिल गया।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १२९)

२०४-मुरदा कब्र में आंखें मलता है। नमाज़ पढ़ना चाहता है।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १३१)

२०५-हज़रत के अगले-पिछले गुनाह खुदा ने माफ कर दिये।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १३८)

नोट—अरब के लोग खजूर के दरख्तों की आपस में शादी किया करते थे। हज़रत ने ऐसा करने से मना किया। इत्तिफाक

से उस साल खजूरों की फसल मारी गई। लोगों ने आकर हज़रत से शिकायत की कि दरख्तों की शादी न करने से फसल पैदा नहीं हुई। इस पर हज़रत ने ऐसा हुक्म दिया।

२०६-मेरा दीनी हुक्म मानो, बस! बाकी में तुमको इख्तियार है। (जिल्द १ हदीस नम्बर १४०)

२०७-ईमान मदीने में सांप की तरह सिमट जायेगा। (जैसे सांप सिमटता है। अपने सूराख में)।

(जिल्द १ हदीस नम्बर १५३)

नोट–यहां पर प्रस्तुत पुस्तक का प्रथम दस्ता (मिश्कात की सैर) का विषय समाप्त होता है।

मिनहाजुन्नबूवत तजुर्मा मदारिजुन्नबूवत की सैर

दूसरा दस्ता

जिल्द-१

हज़रत का थूक-

१-आबेदहन उस सरवर (हजरत मुहम्मद) का शिफाबख्श (निरोग करने वाला) था बीमारियों का और दिलफिगारों का। हजरत अंश के घर में एक कुआं था, उसमें हज़रत ने थूका। उसका पानी मदीने वाले कुएं से भी मीठा हो गया।

(जिल्द १ सफा १६)

हज़रत का पसीना-

२-बाज हदीसों में आया है कि गुलाब पैदा हुआ है हजरत के पसीने से। हजरत ने फरमाया कि चमेली मेरे पसीने से पैदा हुई है मैराज की शब (रात) को, और गुलाब जिब्राईल के पसीने से और चम्पा बुराक घोड़े के पसीने से। मैराज की रात को बदन से पसीने की बूंद टपकी, उससे गुलाब पैदा हुआ।

(जिल्द १ सफा २०)

हज़रत का पाखाना-पेशाब-

३-जब हजरत पाखाना-पेशाब* करते थे, तो जमीन खुद

* श्री मोरारजी देसाई जो तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री थे, तो उन्होंने स्वमूत्र पीने का अनुभव स्वयं भी किया तथा औरों को भी कराया, चिकित्सा क्षेत्र में "स्वमूत्र चिकित्सा" व गाय के मूत्र द्वारा रोगों का निदान लिखा है, परन्तु ऐसी आश्चर्यजनक करामात जो हजरत के पाखाना व पेशाब में थी, कहीं देखने व सुनने को नहीं मिली, इन बातों का बखान करना हजरत द्वारा अपने आप में कहीं जुर्रत से ज्यादा हिम्मत का काम था। -सम्पादक

बखुद फट जाती थी और उस पाखाना-पेशाब को निगल जाती थी। हज़रत के पाखाने के सने ढेले मुसलमान उठाकर सूंघते थे, तो उनको खुशबूदार पाते थे। अम्म ऐमन-एक लौंडी ने हज़रत का पेशाब पिया, तो हज़रत ने फ़रमाया कि पेट दर्द न करेगा। अम्म यूसुफ़ ने भी पेशाब पिया था, उससे कहा कि तू बीमार न होगी। एक मर्द ने पेशाब पिया, तो उसके बदन से और उसकी पुश्तों तक के बदन से खुशबू आती रही। हज़रत ने हजामत बनवाई, तो खून निकला जिसे हज्जाम पी गया। हज़रत ने खून पीने वाले को कहा कि यह बहिश्ती है। हज़रत की ग़िलाजत (हर चीज) पाक है।

(जिल्द १ सफा ४७ व ४८)

हज़रत का मुबाशरत–

४-मुबाशरत ज़िना (सम्भोग) को कहते हैं, ज़िना (सम्भोग) न करना पैदा करता है बीमारी-शदीद। हज़रत एक रात में तमाम बीवियों से बारी-बारी से सोहबत करते थे। हज़रत को ४० बहिश्ती मरदों की ताकत दी गई थी। बहिश्ती १ मर्द में १०० जमीन के इन्सानों की ताकत होती है।

(जिल्द १ सफा ४९ व ५०)

५-हज़रत की अक्ल ९९९ हिस्से थी। अगर अक्ल के १ हजार हिस्से किये जायें, तो ९९९ हिस्से हजरत में थी और एक हिस्से में कुल जहान है।

(जिल्द १ सफा ७२)

हज़रत गुनाहगार थे–

६-"ले यगफ़िर लकल्ला हो मा तकद्दममिम ज़म्बेक व मा तअख्खर।" अक़बाल-कौल इस जगह बहुत हैं। बाजों ने कहा है–मुराद है वह चीज़ जो वाकय (पैदा) हुई हज़रत से जहालियत में नबी होने से पहले। मजाहिद ने कहा कि **"मात-कद्दमा"** के।

(जिल्द १ सफा ७२)

अर्थ–"ऐ मुहम्मद! अल्लाह ने तेरे अगले-पिछले सब गुनाह eki Qdj fn; s* lsepkn&ekfj;ka का किस्सा है? "मा तअख्खरा" से मुराद जो ज़ैद मुतबन्ना की बीवी ज़ैनब के निकाह से है। खुदा ने अपने हबीब (दोस्त) को फ़रमाया कि तेरे उन गुनाहों को जो गुजरे और उन गुनाहों को जो आयन्दा हों (अर्थात् आगे होने वाले) सबको बख्शता हूं। देखिये–**"बख्शा हमने तुझे और दर गुज़र किया हमने उन गुनाहों से जो तुमसे हुए और आयन्दा होंगे।"**

(मिनहाज जिल्द १ सफा १५१, १५२, १५४)

जब हर एक उम्मत अपने-अपने पैगम्बरों से शिफ़ाअत की ख्वाहिश करेगी, तब वे-पैगम्बर याद करेंगे अपने-अपने गुनाहों को।

(जिल्द १ सफा १५५)

नोट : *मारिया एक लौंडी थी। हफ़सा बीवी थी जिसकी बारी में हज़रत ने उसी के बिस्तर पर उसकी गैरहाजिरी में उस लौंडी से सोहबत (सम्भोग) की इतने में हफ़सा आ गई। हज़रत ने उसके तीखे तेवर देखकर उससे माफी मांग ली और मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया। लेकिन हज़रत से न रहा गया और आयत उतार कर फिर हलाल (खुदा द्वारा स्वीकृत) कर लिया। **"सम्पादक"**

"व जदक' जाल्लन् फ़हदा" यानी और पाया तुझे खुदा ने 'जाल'-गुमराह पस रहनुमाई की जाल के माने गुमराह नस्व के सीविका ज़लालत की तरफ उस सरवर के।

(जिल्द १ सफा १७७)

"वजह क जाल्लन् फ़्हदा" यानी पाया खुदा ने उस सरबर की राह गुम की थी, पस रहनुमाई की।

(जिल्द १ सफा १८०)

फ़रमाया रसूले खुदा ने क़स्द नहीं किया मैंने किसी हाल में किसी चीज़ की तारीफ़ उन चीजों से जो पहले जाहिलियत (जहालत के समय के लोग) अमल करते थे मगर दो बार... (सोहबत) और बाद उसके हरगिज़ नहीं क़स्द किया मैंने बदी का।

(जिल्द १ सफा १८२)

बाजों ने कहा–मुराद बकुअ गुनाह है सह्व और ग़फ़लत (भूल और प्रमाद) से और यह वह तावील हैं जिसे तिबरी ने हिकायत किया है, और कैसरी ने इख्तयार किया है। समरकन्दी ने कहा कि "जम्ब" मुराद तर्कऊला है–(परम धर्म छोड़ना है।)

(जिल्द १ सफा १८५)

मुरदा परिन्दों को जिन्दा करना–

७-हज़रत इब्राहीम ने खुदा से सवाल किया कि **"कयामत के दिन मुरदे किस तरह जिन्दा होंगे?"** खुदा ने कहा–**"बहुत से परिन्दे (मिश्रित) पहाड़ पर रख दे और हर एक को**

पुकारो'' इब्राहीम ने ऐसा ही किया। हर एक परिन्दे को कुचल डाला गया था अपने-अपने रूप रंग से उड़कर इब्राहीम के पास आ गए। खुदा ने आदम को अपने हाथ से बनाया और उसमें अपनी रूह फूंकी।

(जिल्द १ सफा १८८, १८९)

८-आदम को यह फजीलत-(बड़प्पन) दी गई कि पैदा किया अल्लाह ने उसको अपने हाथ से और रूह फूंकी अपनी उसमें।

(जिल्द १ सफा २२९)

पत्थर ने रसूल होने की गवाही दी-

९-पस! इशारा किया हजरत ने उखाड़ा गया वह पत्थर अपनी जगह से और सलाम किया उसने, और उन जनाब के आगे खड़ा हुआ और शहादत दी उस पत्थर ने जनाब की रिसालत पर।

(जिल्द १ सफा २३१)

''संगअसवद''[१] खुदा का दाहिना हाथ है-

१०-**''अल् हज़रुल असवदो यमीनल्लाह''**। यमीन के माने सीधा हाथ और कुब्बत और तवानाई है। अर्थ संगअसवद खुदा का दाहिना हाथ है जिसका बोसा (चुम्बन) दिया जाता है। कयामत के दिन इस पत्थर के आंख और जुबान होगी। अपनी जयारत करने वालों को पहुंचावेगा और उसके लिए बख्शवाने

१. ''संग असवद'' मक्के में काबा के अन्दर स्थित एक काले पत्थर का नाम है जो शिवलिंग के आकार का है। जिसका प्रत्येक हज्ज करने वाला मुसलमान बोसा (चुम्बन) लेता है और अपने को धन्य समझता है।

-''सम्पादक''

की ख्वाहिश करेगा।

(जिल्द १ सफा २३३)

पत्थर ने हज़रत से बातें की।

(जिल्द १ सफा २३७)

हज़रत को अजनबी औरत मुब्बाह हैं–

११-जैसा कि मुहब्बाह होना नजर का, ऊपर अजनबी औरतों के, और जायज होना बेवा खिलवत का, अजनबी औरत से...शौहर वाली औरतें अपने मर्द पर हराम होती थीं, अगर उन औरतों को रसूल चाहे।

(जिल्द १ सफा २४३)

"सफिया" जंगेखैबर में कैद हुई, जब वह हज़रत के सामने आई तो हज़रत आयशा ने विचारा कि कहीं ऐसा न हो कि हज़रत की निगाह* इस पर पड़ जाये। सफिया निहायत खूबसूरत थी। ज्यों ही हज़रत ने देखा फौरन निकाह कर लिया।

(जिल्द १ सफा २४४)

१२-सबको उस सरबर हज़रत मुहम्मद के नूर से पैदा किया।

(जिल्द १ सफा २४६)

---

* वह पैगेम्बर था या पक्का अय्याश! जबकि यह सच है कि हर जंग में जितना लूट का माल मिलता था, उसमें जवान औरतें भी शामिल होती थीं, तथा जिस पर हजरत का दिल आ गया समझो वह उनकी गिरफ्त में आ गयी तथा उसे आयत उतार कर (जो खुदा की तरफ से होती थी) मंजूर करा लिया उन औरतों के लिए आज भी सैकड़ों कोठरियां मक्का में काबा वाली मस्जिद के अन्दर (गवाह के रूप में) मौजूद हैं। –"सम्पादक"

१३-हज़रत को खुदा ने बहिश्ती शराब पिलाई थी।

(जिल्द १ सफा २४८)

१४-सुहाब-टूटने वाले तारे से, आसमान से, शैतान आगे जाते हैं।

(जिल्द १ सफा २५१)

१५-असराफील हज़रत के पास दो मरतबा आया। जब हज़रत ७ बरस के हुए असराफ़ील फ़रिश्ता मुल्जिम हो गया।

(जिल्द १ सफा २६२)

समीक्षा—जब असराफ़ील सूर्रा लिये फूंकने को हर समय तैयार रहता है, तो अपना काम छोड़कर कैसे आया? यह खुदाई अन्धेर है।

१६-हज़रत का नमाज में (पाठ का) भूल जाना सबको तसलीम (स्वीकार) है।

(जिल्द १ सफा २६४)

नोट—हो सकता है तब ध्यान किसी खास खूबसूरत शय की ओर चला जाता होगा।

१७-"**जौनिया**" अरब की खूबसूरत औरत का किस्सा बयान किया गया है जिसमें हज़रत ने उसको बुलाकर उससे नफ्स बख्शवाना चाहा अर्थात् उसे अपने लिए सम्भोग के लिए तैयार किया।

(जिल्द १ सफा २६५)

१८-हज़रत ने एक औरत की बगल में सफैदी* (सफेद बाल) देखकर उसे त्याग दिया।

(जिल्द १ सफा २६६)

१९-हज़रत हसन हुसैन का सिर सूंघते थे।

(जिल्द १ सफा २६९)

२०-जिसनें देखा मुझे (हज़रत को) उसने देखा खुदा को।

(जिल्द १ सफा २६१)

२१-मोमिनों की रूहें हरे परिन्दे बनकर बहिश्ती मेवे खाती हैं।

(जिल्द १ सफा २९१)

२२-अल्लाह ने "**अम्बिया**" की खता और तोबा का जिक्र किया है।

(जिल्द १ सफा २९७)

समीक्षा—मुसलमानों का विश्वास है, नबी खता से बरी होते हैं, सो गलत है। नबी गुनाहगार भी होते हैं। इससे तो यही सिद्ध होता है।

२३-बाप, बेटे के आमाल-(कर्मों) का जिम्मेदार नहीं होता, यह कुरान की आयत मन्सूख (समाप्त) हो गई। (जैसी करनी वैसी भरनी इस्लाम में नहीं रही।)

(जिल्द १ सफा ३१७)

२४-अल्लाह ने क़लम से सबकी तक़दीरें लिखी हुई हैं।

(जिल्द १ सफा ३३९)

---

* अर्थात् हज़रत को बूढ़ी औरतें पसन्द नहीं थीं। -"सम्पादक"

खुदा भी नमाज़ पढ़ता है–

२५-पश! एक निदा–(शब्द) करने वाले ने अबूबकर की आवाज में कहा कि–**"खड़ा रह ऐ मुहम्मद! आज परवरदिगार तेरा, नमाज पढ़ता है।"**

(जिल्द १ सफा ३४२)

२६-खुदा ने अपना हाथ हजरत के सीने पर धरा, हजरत को खुदा के हाथ की ठंडक मालूम हुई।

(जिल्द १ सफा ३४३)

नोट : जिससे साफ मालूम होता है कि क़ुरानी खुदा शरीरधारी है।

२७-चाँद का एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर और दूसरा पहाड़ के नीचे गिरा। चाँद हज़रत की आस्तीन से निकला। यह शक्कुल कमर-चाँद के दो टुकड़े करने का मौजजा अर्थात् चमत्कार है।

(जिल्द १ सफा ३५७)

हज़रत पर शैतान का ग़लबा–

२८-एक दफ़ा सफ़र में हज़रत सो गये, सूरज निकल आया। जब हज़रत के पेट पर धूप आ गई, तब हज़रत जगे और कहा–**"चलो यह जगह शैतान की है। नमाज़ फ़ौत हो गई।"** (हज़रत कहते थे कि मुझ पर शैतान का असर नहीं होता लेकिन इस जगह शैतान ने नमाज के वक्त सुला दिया और नमाज क़ज़ा करा दी)।

(जिल्द १ सफा ३६०)

२९-हज़रत की जुदाई में मस्जिद का सुतून–(खम्बा) रोया।

(जिल्द १ सफा ३७१)

३०-अल्लाह आपस में लड़ाई करायेगा।

(जिल्द १ सफा ३७८)

३१-दो गिरोह अली के दुश्मन हैं—खारिजी और राफ़जी।

(जिल्द १ सफा ३७८)

३२-गुनाह सबब मर्ज का है। (हज़रत भी मरीज हुए थे। क्या वह भी गुनाहगार थे?)

(जिल्द १ सफा ३८३)

३३-ताबीज़ बाँधना शिर्क है।

(जिल्द १ सफा ३८५)

३४-गुनाहों के सबब से रिजक की तंगी होती है। हज़रत को भी अक्सर खाना नसीब नहीं होता था, इसीलिए पेट से पत्थर बाँधकर रखते थे, क्योंकि वह भी गुनाहगार थे?

(जिल्द १ सफा ३९२)

३५-हज़रत ने कहा—अगर बच्चा पैदा हो तो, उसके सीधे कान में अज़ान कहें।

(जिल्द १ सफा ३९२)

३६-जब हज़रत हदीविया की लड़ाई से वापिस लौटे, तो उन पर जादू किया गया।

(जिल्द १ सफा ३९६)

३७-हज़रत ने फरमाया कि औरत व मर्द की रूह (आत्मा) सोते वक्त बदन से निकलकर अर्श (आसमान) की तरफ जाती

है। (अरबी रसूल रूह की हक़ीकत भी खूब जानते थे।)

(जिल्द १ सफा ३९८)

३८-हज़रत ने ख्वाब (स्वप्न) में दूध पिया। हज़रत को ख्वाब में खजाने मिले।

(जिल्द १ सफा ४०१)

समीक्षा—मुसलमान कहते हैं कि हज़रत को ख्वाब (स्वप्न) नहीं होता था। इस रिवायत (पाठ) से पता चलता है कि उनको रुपये दीखते थे।

३९-हज़रत की कुन्नियत अब्बुल मोमिनीन है।

(जिल्द १ सफा ४११)

समीक्षा—कुन्नियत कहते हैं अपने आपको बाप या बेटों के नाम से जाहिर करना। अब्बुल मोमिनीन के माने हैं मुसलमानों का बाप। जब मुसलमानों के बाप हैं, तो अपनी..."**औरत**" हज़रत के लिए हलाल कैसे हुई?

४०-खुदा और रसूल दोनों के हजार नाम हैं।

(जिल्द १ सफा ४११)

४१-रहीम, करीम, नूर और अजीम, खुदा और रसूल दोनों के नाम हैं।

(जिल्द १ सफा ४१४)

४२-हज़रत ने फरमाया कि मुझे पहले आदम के सलब में नुतफे में रक्खा, फिर नूह के, फिर इब्राहीम के।

(जिल्द १ सफा ४१८)

समीक्षा–अर्थात् हज़रत का नूर आवागमन के चक्कर में पड़ा था।

४३-आदम ने कहा कि मुझको गेहूँ खाने से बहुत नदामत है। नूह कहेंगे कि मैंने अपने बेटे के लिए नादानी से दुआ की। इब्राहीम कहेंगे कि तीन बातें मैंने झूठ कहीं–

१. मैंने कहा मैं बीमार हूँ–**"इन्नी सकीम"**।

२. मैंने बुतों को नहीं तोड़ा।

३. मैंने जोरू को बहन कहा।

(यही तीनों बातें हज़रत इब्राहीम ने गलत कही थी, इसीलिए अपने को गुनाहगार कहते थे)।

४४-जिसके दिल में गेहूँ और राई के बराबर भी ईमान होगा, वह भी बख्शा जायेगा। अगर गुनाहगार शख्स भी **"लाइलाह इल्लिल्लाह मौहम्मद रसूलल्लाह"** कहेगा, तो उसे दोजख से निकाल कर बहिश्त में डाला जायेगा।

(जिल्द १ सफा ४२५)

४५-जो मेरी कब्र की जियारत (परिक्रमा) करेगा, उसकी शिफाअत होगी।

(जिल्द १ सफा ४२६)

४६-जिब्राईल फरिश्ता सबके आमाल (कर्मों को) तौलेगा, उसके हाथ में इन्साफ की तराजू होगी।

(जिल्द १ सफा ४२९)

४७-मेरे साथ जन्नत में वह औरत जाना चाहेगी जिसने पूछने

पर कहा, मैंने अपने पति के मरने के बाद दूसरी शादी नहीं की।
(जिल्द १ सफा ४३०)

समीक्षा–इस्लाम की रूह से भी मालूम होता है कि विधवा-विवाह या नियोग आपद्धर्म है।

४८-ईसा की रूह अल्लाह की रूह (आत्मा) है अर्थात् ईसा की आत्मा ईश्वर की आत्मा है।
(जिल्द १ सफा ४३१)

समीक्षा–संसार में क्वांरियों से पैदा हुई क्या सभी रूहें अल्लाह का रूप हैं?

४९-सिवा खुदा के दूसरे की कसम खाना कुफ्र है।
(जिल्द १ सफा ४३२)

५०-दोपहर का सोना, सराय और मरदसे बनाने से बेहतर है।
(जिल्द १ सफा ४३६)

समीक्षा–हज़रत दोपहर को सोते थे। उन्होंने सराय और मदरसे नहीं बनवाये, इसलिये सुन्नत होने से दोपहर का सोना बेहतर है। इनकी इसी जहालत ने अरबियों को बेइल्म रक्खा।

५१-सर्फ नहव (व्याकरण विद्या) का इल्म हज़रत के जमाने में नहीं थी।
(जिल्द १ सफा ४३६)

समीक्षा–जो काम हजरत ने नहीं किया, उसका करना "**बिदअत**" कहाता है; परन्तु जो काम नहीं किया, लेकिन है

वह अच्छा काम, तो उसका करना **"बिदअते हसना"** कहाता है।

५२-हज़रत उमर ने कहा मैं जानता हूँ कि-**"ऐ संगअसवद तू पत्थर है"** लेकिन तुझको हज़रत ने चूमा है अर्थात् तेरा बोसा लिया है इसलिए मैं भी तुझे चूमता* हूँ।

(जिल्द १ सफा ४३६)

५३-अब्दुल्ला बिन हज़र वजु करके एक दरख्त के इर्द-गिर्द घूमता (परिक्रमा करता) था और उसकी जड़ में पानी डालता था। पूछने पर कहा कि-**"हज़रत ऐसा ही करते थे, इसलिए मैं भी करता हूँ।"**

(जिल्द १ सफा ४३७)

वाह! री अन्धी तक़लीद? (कुछ नमूने देखिये)

५४-खुदा और रसूल को दोस्त रक्खें, तो नमाज व रोजे की हाज़त (जरूरत) नहीं है।

(जिल्द १ सफा ४४०)

५५-एक शख्स ने दो बार शराब पीयी, हजरत ने कहा इसको लानत मत कहो, (क्योंकि) यह मुझे और, खुदा को दोस्त रखता है।

(जिल्द १ सफा ४४३)

---

* इससे नफा-नुकसान कुछ नहीं है, तो फिर मुसलमान इसको क्यों चूमते हैं? इसी को **"अंधी तकलीद"** कहते हैं। जबकि आजकल विज्ञान के युग में एक-दूसरे का झूठा खाना या एक ही चीज को बहुतों द्वारा चूमना अनेकों रोगों को बुलावा देना है जैसे कि किसी रोगी ने किसी चीज़ को चूमा तो निरोगी को उसे चूमने से उसके द्वारा वह रोग लग जायेगा। -**"सम्पादक"**

(क्योंकि वह शख़्स कुछ सब्जी व तरकारी हज़रत को लाकर देता था)

५६-हज़रत के वजू के पानी से लोग अपना मुँह और बदन साफ करते थे।

(जिल्द १ सफा ४४८)

५७-रसूल के अदब से ज्यादा कोई इबादत नहीं।

(जिल्द १ सफा ४४९)

५८-हज़रत अपनी जुबान (जीभ) लोगों के मुंह में देते थे।

(जिल्द १ सफा ४५४)

५९-मुसलमान ३ तरह के हैं–महाजिर, अन्सार और उनके बाद जो पैदा हुए। लेकिन सिया इन तीनों में नहीं हैं।

(जिल्द १ सफा ४५२, ४६०)

६०-हज़रत फरमाते थे कि–"ऐ खुदा! तू मेरे गुनाह बख्श दे।"

(जिल्द १ सफा ४७१, ४७२)

६१-आँ हज़रत रसूल होने से पहले किस शरीअत के मुआफिक इबादत करते थे? इसमें इख्तलाफ (विभिन्नता) है।

(जिल्द १ सफा ४८९, ४९०)

६२-अबदुल्ला बिन जैद ने फ़रिश्ते से अजान सीखी, फरिश्ते के हाथ में शंख था।

(जिल्द १ सफा ५१४)

६३-हज़रत ने ५ दफां से ज्यादा नमाज में भूल की।

(जिल्द १ सफा ५५०)

६४-हज़रत ने लात और उज्जा बुतों की तारीफ़ की।

(जिल्द १ सफा ५५२)

६५-अल्लाह ने यहूद और नसारा (ईसाइयों) को गुमराह किया।

(जिल्द १ सफा ५५४)

६६-"आयशा" गुमान करती थी कि हज़रत मेरी...बारी में अपनी अन्य बीवियों के पास नहीं जाते हैं बल्कि मौका पाकर उनकी बारी भी मुझे ही दे देते हैं।

(जिल्द १ सफा ५६९)

६७-खुदा नीचे के आसमान पर उतरता है।

(जिल्द १ सफा ५८१)

६८-हज़रत के पीने के लिए जिब्राईल बहिश्ती शराब लाता था!

(जिल्द १ सफा ६३३)

६९-हज़रत को तीन चीजें बहुत प्यारी थीं-(१) खुशबू, (२) औरतें और (३) खाना।

(जिल्द १ सफा ६७६)

७०-हज़रत की औरतों से तबीयत नहीं भरती थी। एक-एक रात में हज़रत बारह-बारह औरतों से मुबाशरत (भोग) कर लेते

थे।

(जिल्द १ सफा ७२९)

७१-हजरत का कहना था कि–ज्यादा (बच्चे) जनने वाली औरतों से निकाह करो।

(जिल्द १ सफा ७३०)

समीक्षा–क्या शादी करने से पहले किसी (परीक्षक) के पास भेजकर इमतहान करा लें कि यह औरत ज्यादा बच्चे जनेगी? वरना और दूसरी तरकीब क्या है? जिससे जाने कि यह औरत ज्यादा बच्चे जनेगी? जिनके मज़हब के ऐसे मसले हों, वह भी नियोग पर हाथ डालते हैं?'' लानत है उन पर...।

मिनहाजुन्नबूवत तजुर्मा मदारिजुन्नबूवत की सैर

जिल्द-२

१-हज़रत मौहम्मद साहब फरमाते हैं–खुदा ने अव्वल (सर्व प्रथम) मेरा नूर (ज्योति) पैदा किया, उससे दुनिया पैदा हुई।

(जिल्द २ सफा १ व २)

२-खुदा कहता है... अगर तू (मुहम्मद) न होता, तो मैं दुनिया को पैदा न करता।

(जिल्द २ सफा ५)

३-हज़रत आदम की बायीं पसली (हड्डी) से हज़रत "**हव्वा**" को पैदा किया।

(जिल्द २ सफा ६)

४-आदम के आंसुओं से...ऊद, ज़ज्जाबील, और बहुत-सी खुशबुएँ पैदा की।

(जिल्द २ सफा ७)

५-"**हव्वा**" से हर दफा जोड़ा पैदा होता था। '**शैस**' मुहम्मद के बुजुर्ग अकेले पैदा हुए। हव्वा ने शैस को वसीयत की, शैस ने '**अनौश**' को वसीयत की कि इस नूर को औरतों में रखना। (इस तरह बहुत–से मर्द-औरतों में होता हुआ नूर हज़रत अब्दुल्ला अर्थात् हज़रत के बाप तक पहुँचा)।

(जिल्द २ सफा ७)

६-सफ़्हा (नीचे दरजे) के लोग अपनी औरतों को शुरफा

(शरीफ) लोगों के पास भेजते थे, ताकि वे हामिल (गर्भवती) हो जावें। कभी-कभी औरतें मुद्दत तक जिना (सम्भोग) करातीं, फिर उनसे शादी कर लेतीं। अरब में पुराने जमाने में औलाद हासिल करने के कई तरीके थे, छोटे लोग अपनी औरतों को शरीफ लोगों के पास भेज देते थे, जिससे कि बच्चा अच्छी नसल का पैदा हो। कभी-कभी एक टोली भर से औरत सम्भोग करतीं थीं। बच्चा पैदा होने पर जिसकी शक्ल का होता था, वही उसका बाप माना जाता था। बहुत-सी औरतें अनेक मरदों से व्यभिचार कराती रहती थीं, जब कभी दिल में आता तो उन्हीं में से किसी एक के साथ निकाह कर लेती थीं, वरना इसी तरह उम्र गुजार देती थीं। हज़रत फ़रमाते हैं कि मैं इस तरह पैदा नहीं हुआ।

(जिल्द २ सफा ५५)

७-हज़रत भी औरों के साथ काबे की मरम्मत के लिए कन्धे पर पत्थर ढो रहे थे। आपने अपनी इज़ार अर्थात् पाजामा उतारकर अपने कन्धे पर पत्थर के नीचे रख लिया, पत्थर ढ़ोते-ढ़ोते थककर गिर पड़े और सारे गुप्तांग आगे-पीछे से लोगों को दिखा दिये।

(जिल्द २ सफा ५६)

८-काबे को पहले "शैस" ने बनाया।

(जिल्द २ सफा ५८)

९-सबसे पहले जिब्राईल फरिश्ता कुरान की आयत रेशमी कपड़े पर लिखी हुई हज़रत के पास लाया और कहा "पढ़"।

(जिल्द २ सफा ६२)

१०-जिब्राईल ने हज़रत को वजु करना और नमाज़ पढ़नी सिखाई।

(जिल्द २ सफा ६२)

११-कोई कहता है कि सबसे पहले **"इकरा बिस्मे रब्बेक"** आयत नाज़िल हुई, कोई कहता है कि **"याअय्योहल मुद्दस्सरो"** यह आयत नाज़िल हुई, कोई **"सूरए फातेहा"** का उतरना सबसे पहले बताता है। (अजीब गड़बड़ है।)

(जिल्द २ सफा ६८)

१२-जिब्राईल यहैया की शक्ल में जिब्राईल फ़रिश्ता हज़रत के पास आता था। (यहैया) को भी जिब्राईल नाम से पुकारते थे। यह मक्के में उस वक्त सबसे खूबसूरत आदमी था। इसीलिए इसी की शक्ल में फ़रिश्ता भी आता था। (मुमकिन है कि यही जिब्राईल शख्स मक्के का खूबसूरत आदमी हज़रत को इनकी मरजी के मुआफिक आयतें बनाकर देता हो और हज़रत ने यह ज़ाहिर कर दिया हो कि यह मक्के का जिब्राईल नहीं है लेकिन फरिश्ता है और मक्के वाले जिब्राईल की सूरत इखत्यार किये हुए हैं।

(जिल्द २ सफा ७०)

१३-बदर की लड़ाई में मरे हुए, बहिश्त में गये हैं।

(जिल्द २ सफा ७२)

१४-जिब्राईल के छः सौ पर थे।

(जिल्द २ सफा ७२)

समीक्षा–तआज्जुब है कि मिरज़ाई लोग जिब्राईल के वजूद और परों से इन्कार करते हैं। हमने यह हवाला इसीलिए दिया है।

१५-हज़रत फ़रमाते हैं कि–मैराज के मौके पर मैंने खुदा को बेहतरी (अच्छी सूरत) में देखा। खुदा ने मेरे दोनों शानों (मोढ़ों) के बीच में हाथ रख दिया। खुदा की उँगलियों की ठंडक मुझको मालूम पड़ी।

(जिल्द २ सफा ७३)

नोट–अब बताइये कि क्या इस्लामी खुदा शरीरधारी नहीं है?

१६-एक आयत को भी कुरान कहते हैं।

(जिल्द २ सफा ७७)

१७-कुरैशियों का अकीदा (विश्वास) था कि बुत शिफा दिलाने वाले हैं खुदा से कहकर बख्शवाने वाले हैं, न कि खालिक (सृष्टिकर्त्ता) हैं। न मारने-जिलाने वाले हैं, न रोज़ी दिलाने वाले हैं। (इसी प्रकार का मुसलमानों का **"संगअसवद"** है।)

(जिल्द २ सफा ८५)

१८-सूरए नज्म में शैतान ने आयत-मिला दी।

(जिल्द २ सफा ८५)

१९-आयशा शादी के वक्त छः साल की थी।

(जिल्द २ सफा १०२)

२०-मछली की पीठ पर जमीन कायम है।

(जिल्द २ सफा १४८)

२१-आयशा ज़फाक (भोग) करने के समय ९ साल की थी।

(जिल्द २ सफा १४८)

२२-यहूदियों की ख़ातिर उन्हें खुश करने के लिए हज़रत मदीने में बैतूल मुकद्दस (यहूदियों के काबे) की तरफ को मुंह करके नमाज़ पढ़ते थे।

(जिल्द २ सफा १६६)

२३-मोमिनों (मुसलमानों) की रूहें बहिश्त में परन्द बनती हैं।

(जिल्द २ सफा २१३)

२४-मुसलमानों उज्ल किया करो, क्योंकि यह जायज है।

(जिल्द २ सफा ३१२)

२५-अबदुल्ला बिन हमार शराब पीता था, लोग इसको बुरा कहते थे। हज़रत ने कहा, इसको मलामत अर्थात् बुरा मत कहो।

(जिल्द २ सफा ३५५)

समीक्षा—यह हज़रत का दोस्त था, अक्सर सब्जी-तरकारियाँ वगैरह बाहर से लाकर दे दिया करता था। इसी से हज़रत मना करते थे कि इसे कुछ मत कहो, कहीं ऐसा न हो कि ये चीजें लाना ही बन्द कर दें।

२६-आख़िरी तक खैबर की लड़ाई का दिया हुआ ज़हर रगेजान को तोड़ता रहा। हज़रत की एक औरत ने हज़रत को जहर दे दिया था।

(जिल्द २ सफा ५०८)

२७-मरते समय आयशा ने हज़रत के मुंह में अपनी जूठी दातुन चबा कर दी तब कहीं जाकर हज़रत के प्राण निकले।

(जिल्द २ सफा २९३)

नोट–भई कुछ भी कहो! मोहब्बत हो तो ऐसी!

२८-आयशा की हथेली बहिश्त में देखकर हज़रत की मौत आसान हो गई।

(जिल्द २ सफा ७९४)

समीक्षा–हज़रत का दम नहीं निकलता था। खुदा ने आयशा की हथेली आसमान पर दिखाई, तब हज़रत को तसल्ली हो गई कि १८ बरस की आयशा यहाँ छुटती है, तो आसमान में मिल जायेगी, अब मरने में कोई घाटा नहीं है।

२९-हज़रत सौदा के बूढ़ी होने पर हज़रत ने उसे तलाक देनी चाही। परन्तु उसने कहा कि मैं अपनी "**सम्भोग**" वाली बारी आयशा को देती हूँ। जनाब ने उसको फिर तलाक नहीं दी।

(जिल्द २ सफा ८५१)

३०-हज़रत ने जब "जैनब" से भोग करना चाहा, तो हज़रत जैनब ने कहा कि बिना निकाह यह क्या करते हो?

जनाब ने फरमाया कि खुदा ने मेरा और तेरा निकाह आसमान पर पढ़ दिया है। जिब्राईल फ़रिश्ता गवाह है। इतना सुनकर जैनब खामोश हो गयी, और हज़रत लाईन पर लग गये।

(जिल्द २ सफा ८६६)

३१-जौनिया एक अरब की खूबसूरत औरत थी हज़रत ने उसे बुलाकर कहा कि तू अपना नफ्श मुझे बख्श दे यानी बिना महर मुझसे खिलवत (सम्भोग) करा ले। उसने सख्त जवाब दिया। हज़रत ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया, वह चिल्ला उठी।

(जिल्द २ सफा ८७८)

३२-अर्श मखलूक (पैदाशुदा) है।

(जिल्द २ सफा १०९१)

३३-हज़रत की सूरत का तसव्वुर (ध्यान) करना और ज़हन में हाजिर करना चाहिए।

(जिल्द २ सफा १०९०)

३४-हज़रत तेरा कलाम सुनते और देखते हैं, क्योंकि आप सिफ़ाते-इलाही (ईश्वर के गुणों) से मुत्तासिक (युक्त) हैं।

(जिल्द २ सफा १०८९)

३५-**"लौलाक लमा खलकतुल अकलाक"** ऐ मुहम्मद! यदि तुम न होते, तो हम आसमानों को पैदा न करते।

(जिल्द २ सफा १०८३)

३६-अम्बिया (नबी लोग) अस्म ए-ज़ातिया (निज नामों) से पैदा किए गए हैं। औलिया (वली लोग) अस्माए सिफातिया

(गौण नामों) से पैदा किये गये हैं और बाकी मौजूदात अस्माए फेलिया (कार्मिक) नामों से पैदा किये गये हैं। और हज़रत रसूलेमुहम्मदसाहब खुदा की जात से पैदा किये गये हैं।

(जिल्द २ सफा १०७९)

३७-एक औरत का पति दो बरस तक बाहर रहा, पीछे बच्चा पैदा हो गया*। खलीफा ने यह बच्चा उसी का बताया।

(जिल्द २ सफा १०११)

३८-जन्नत में प्रत्येक मुसलमान को १०० खूबसूरत औरतें मिलेंगी तथा ७० जन्नती औरतें (हूरें) और ३० दुनियावी औरतें!

(जिल्द २ सफा १०००)

नोट—वाह! वाह!! क्या खूब जन्नत है।

३९-अब्दुल्ला बिन साद बिन अबी सरह हज़रत का कातिब (लेखक) कुरान लिखा करता था। एक रोज जब कि हज़रत उसको कुरान लिखवा रहे थे, उस अब्दुल्ला की जुबान से निकला..."**फतबारकल्लाहो अल्लाहो अल् अहसनुल खालकीन**"। हज़रत ने फरमाया, लिख यही नाज़िल हुआ है। अब्दुल्ला ने ख्याल किया कि यह फ़िकरा तो मैंने अपनी तबीयत से बनाकर कहा था। हज़रत फ़रमाते हैं कि यह जिब्राईल लाया है। उसने यह भी ख्याल किया कि जिस तरह हज़रत पर वही आती है, वैसे ही मेरे ऊपर भी आती है, तो मैं भी पैगम्बर क्यों नहीं? यह बात उसने औरों से भी कहना शुरू कर दी, हज़रत उसके दुश्मन बन गये वह भागकर मदीने को चला गया। हज़रत ने उसको मरवा

---

* इस विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त प्राचीन वैदिक परिपाटी का अध्ययन करें, जिससे ऐसी स्थिति आ ही नहीं सकती! -"सम्पादक"

दिया। वह मुरतिद (बागी) हो गया था, यानी इस्लाम को छोड़ दिया था। (यह किस्सा इसी किताब में दर्ज है।)

(जिल्द २ सफा ९९६)

४०-जिसकी मौत की वजह से रहमान (खुदा) का अर्श (आसमान) हिल गया।

(जिल्द २ सफा २४०)

४१-मारिया कबतिया रसूल की लौंडी थी। एक रोज उसके पास उसका अजीज बैठा था रसूल ने देखकर कहा कि इसको कत्ल कर दो*। हज़रत उमर तलवार लेकर पहुंचे। उसने कहा कि मैं खस्सी अर्थात् नपुंसक हूँ। रसूल ने कहा–जिब्राईल की मारफत खुदा ने पहले ही बता दिया है, इसलिए इसको छोड़ दो।

(जिल्द २ सफा ९४०)

४२-हज़रत ज़ैद को बाहर लाये और फरमाया कि 'ऐ लोगो! गवाह रहो, जैद को मैंने अपना बेटा बनाया, और वह मेरा बेटा है इसलिए वह मेरा वारिस हुआ। इस्लाम का दौर आने तक जैद मुहम्मद का बेटा कहलाता रहा।

(जिल्द २ सफा ९१०)

४३-अबूबकर का पहला नाम अबदुलकाबा था, कुछ कहते हैं कि अबदरब्दुलकाबा था। रसूल ने आपका नाम अब्दुल्ला रक्खा, बाजे कहते हैं कि अतीक नाम रखा। अली का पहला नाम हैदर था। अबूतालिब ने इस नाम को मकसूह (घृणित)

---

* इसका मतलब है कि हज़रत मुहम्मद साहब में ईर्ष्या-द्वेष भी चरम सीमा पर थी।
–"सम्पादक"

जानकर दुबारा अली नाम रक्खा।

(जिल्द २ सफा ९५२)

४४-जैनब का निकाह खुदा ने आसमान पर पढ़ाया।

(जिल्द २ सफा ८७६)

४५-हज़रत रात के वक्त बाहर जाते तो आयशा को शक होता था कि हज़रत मेरी बारी में किसी दूसरी औरत के पास जाते हैं।

(जिल्द २ सफा ८५८)

४६-हज़रत को आयशा की तस्वीर रेशमी कपड़े पर जिब्राईल ने ख्वाब में दिखाई। शादी से पेश्तर (पहले)।

(जिल्द २ सफा ८५४)

४७-हज़रत नबी होने से पहले किसी शरह के पाबन्द नहीं थे।

(जिल्द २ सफा ८४९)

४८-जिब्राईल बहिश्ती शराब हज़रत को पिलाते थे।

(जिल्द २ सफा ६३३)

समीक्षा—हज़रत बहिश्ती शराब रोजे के दिनों में पीते थे।

४९-मौका बिन्तकाब की लड़की से जब हज़रत खिलवत (सम्भोग) करने लगे, तो देखा कि उसके जिस्म पर सफेद दाग हैं। उसको उसके बाप के घर बिना खिलवत (सम्भोग) के ही वापिस कर दिया।

(जिल्द २ सफा ८८०)

हज़रत की धाया "हालिमा" का बयान–

५०-और अगर उस साहबे हया का अन्दाज खुल जाता, तो हज़रत फरमाता, और पुकारता। तब मैं उससे दरयाफ़्त करती, कि क्या यह हरकत और फ़रयाद सिर्फ सतर अर्थात् औरत की योनि के वास्ते है?

(जिल्द २ सफा ४०, ४१)

५१-लैली नाम की औरत से हज़रत ने निकाह तय कर लिया। उसके बावजूद उसने दूसरा शौहर किया और उससे कई फरजंद (बच्चे) हासिल किये।

(जिल्द २ सफा ८८०)

नोट : भाइयो! हज़रत के साथ किया गया निकाह धरा का धरा ही रह गया और हज़रत लैली का मुंह ताकते रह गये और उसका कुछ भी न बिगाड़ पाये।

॥ दूसरा दस्ता समाप्त॥

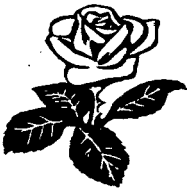

तीसरा दस्ता

तारीख खुलफ़ा की सैर

१-लालकाई ने सनन मैं हज़रत इब्त उमर से रिवायत की है कि एक शख्स ने हज़रत अबबूकर से आकर सवाल किया कि–"क्या आप बतला सकते हैं कि जिना भी खुदा के हुक्म से है?" आपने फरमाया–"हां"। उसने कहा, अव्वल तो (खुदा ने) मेरे लिए (जिना) होना मुकर्रर किया, फिर मुझे आजाब (कपट) भी देगा? अबूबकर ने कहा–"सच है।"

(तारीख खुलफा, सफ़ा ९४, सतर १२, उर्दू तर्जुमा लाहौरी)

२-जो इन्सान इन खब्बीस तरकारियों (प्याज व लहसुन) को खाये, वह मस्जिद में न आवे।

(तारीख खुलफा, सफा ९३, सतर ५, तिबरानी से नकल है)

३-अबूबकर ने कहा..."मैं चिड़िया होता, तो अच्छा था।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १०४)

४-कुरान हज़रत उमर के कौल (कथन) के मुआफिक नाजिल (अवतरित) हुआ है।

(तारीग्व खुलफ़ा, सफा ११८, सतर १३)

५-खुदा सबसे पहले उमर को सलाम करेगा और उससे मुसाफा करेगा। हाथ पकड़कर जन्नत में दाखिल करेगा।

(तारीख खुलफ़ा, सफा ११८, सतर २० व २१)

६-कुरान उमर की राय से नाजिल हुआ।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १२३, सतर १६, १७ व १८)

नोट : कुरान में उमर की राय दर्ज है।

७-उमर कहते हैं कि मेरी जुबान से ज्यूं ही यह कलाम निकला कि-"**फ़तेबारकअल्लाहो अहसनुल खालकीन**" यही आयत नाजिल हो गई।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १२५, सतर १८ व १९)

८-उमर ने मुताअ अर्थात् इस्लाम में प्रचलित एक गन्दी प्रक्रिया को हराम किया।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १४२, सतर १)

९-उमर ने अपनी लड़की से दरयाफ्त किया कि औरत बिना मर्द कितने दिनों तक रह सकती है? (अर्थात् बिना सम्भोग के कितने दिन गुजार सकती है?) वह शर्म से चुप रही। कुछ देर बाद फिर फरमाया...३ महीने।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १४८, सतर ५, ६ व ७)

१०-इब्नमसऊद कहते हैं कि खुदा ने औरत को मर्द की बाई पसली से बनाया है।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १४८, सतर १७)

११-अबूबकर कहते हैं कि-"मैं दरख्त होता; उमर कहते हैं कि दुम्बा होता, तो अच्छा था।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १४९)

१२-तीन सौ आयतें कुरान में (अंकित) अली की शान में हैं। (इलहाम में भी इन्सान का दखल)

(तारीख खुलफ़ा, सफा १८१, सतर १०)

१३-उस्मान ने कुरान को उसी तरतीब (क्रम) से जमा किया, जिस तरतीब से नाजिल हुआ था। मुहम्मद बिन सीरैन कहते हैं कि अगर वह कुरान शरीफ हमारे पास होता, तो इल्म का बहुत बड़ा जखीरा (भण्डार) हमारे पास होता।

(तारीख खुलफ़ा, सफा ११७, सतर ६ से ९ तक)

१४-हज़रत इमाम हसन ने ९० शादियां की थीं।

(तारीख खुलफ़ा, सफा २०३, सतर ९)

१५-इमाम हसन की बीवी जाद बिन्त अंश ने मदीने में यजीद को यह खुफिया पैग़ाम भेजा कि अगर तू इमाम हसन को जहर दे दे, तो मैं तुझसे निकाह कर लूंगी। उसने ऐसा ही किया। इमाम हसन ने उस जहर से वफ़ात (मौत) पाई।

(तारीख खुलफ़ा, सफा २०४, सतर १,२)

१६-हिन्दा ने अपने खाविन्द रफका इब्न मुगैरह का हाथ झटककर कहा कि-"मैं तुझसे औलाद पैदा नहीं करती, यह कहकर उसने अबू सफ़िया से निकाह कर लिया जिससे मुआविदा पैदा हुआ।"

(तारीख खुलफ़ा, सफा १२, सतर १५, १६ और १७)

नोट-इससे पता चलता है कि अरब की औरतें कितनी पतिव्रता थीं?

१७-इमामहुसैन की शहादत (मृत्यु) के बाद उफक़ (शाम) के समय आकाश में छाई हुई लाली पैदा हुई। उससे पहले नहीं थी।

(तारीख खुलफ़ा, सफा २२३, सतर ८)

१८-यजीद ने मदीने पर चढ़ाई की, उसे लूटा और कुमारियों के धर्म भ्रष्ट किये।

(तारीख खुलफ़ा, सफा २२५, सतर ६)

१९-खलीफ़ा हारून ने अपने बाप की लौंडी से सोहबत (बलात्कार) किया। इमाम अबूयूसुफ ने इसके जायज़ होने का फ़तवा (व्यवस्था) दिया।

(तारीख खुलफ़ा, सफा ३०५, सतर ५)

२०-अबूबकर ने ज़ैद बिन साबित से कहा कि कुरान जमा अर्थात् इकट्ठा करो। सही बुख़ारी के हवाले से व रिवायत जैद है कि जंग मसीलमा कज्ज़ाब के बाद जंग यमामा में बहुत से हाफिज मारे गये। ज़ैद बिन साबित कहते हैं कि मैंने पत्थरों, ऊँट की काठियों और बकरियों की शानों की हड्डियों, दरख्त की पत्तियों और हाफिजों के सीनों से अर्थात् उनसे सुन-सुन कर कुरान जमा (एकत्रित) किया।

(तारीख खुलफ़ा, सफा ७६ व ७७)

२१-कुरान की आयत "**अश्शैखो बश्शैखतुन् इजाजैन**" मंसूख अर्थात् कैन्सिल हो गई।

(तारीख खुलफ़ा, सफा १०३, सतर २३)

२२-इब्न जरीर कहते हैं–**"जब अमीन खलीफा हुआ, तो उसने बड़ी-बड़ी कीमतों पर खस्सी अर्थात् नपुंसक खरीदे और उनसे खिलवतें अर्थात् गुदा मैथुन किया, तथा औरतों और लौंडियों को छोड़ दिया।"**

(तारीख खुलफ़ा, सफा ३१४, सतर १६)

नोट : भाइयों! जब देशी या मटके वाली पीने की लत पड़ जाये तो फिर अंग्रेजी नहीं सुहाती।

२३-मुस्कोजहर खलीफा के जमाने में आयतें यूसुफ इस तरह पढ़ी गईं–**"इन्ना उबने कसुरिंक"।**

(तारीख खुलफ़ा, सफा ३१४, सतर १७)

समीक्षा–कुरान में यह आयत सूरए यूसुफ में इस तरह से है–**'इन्नाबनेक सरका"** जिसके माने हैं–तहकीक तेरे बेटे ने चोरी की। काजी ने बजाय सरका के सुर्रिका पढ़ा, जिसके माने यह हो गये कि चुराया गया। खलीफा ने कहा ऐसा ही पढ़ो, इससे पैगम्बर पर चोरी का इलज़ाम भी नहीं लगता। यानी बजाय इसके कि तेरे बेटे ने चोरी की, अब यह माने हो गये कि तहकीक तेरा बेटा चुराया गया। मुसलमान कह दिया करते हैं कि कुरान में कमोबेशी नहीं हुई। जबकि उनका यह कहना गलत है।

॥ तीसरा दस्ता समाप्त॥

चौथा दस्ता

शरह बकाया की सैर

१-कुरान में तहरीफ (कमी-बेशी) या अइयों **"हल्लजीन आमनू इजाकुम् तुमल्स्सवलाते फसेलू औजूहुकुम व ऐदीकुम् इल्लू मराफिके वमसखू बिरुऔसिकुम् व अर्जुलकुम् इलल का बैन!"** इस कुरान में आये हुए शब्द **"अर्जुलकुम्"** को कोई अर्नलकुम पढ़ते हैं, कोई **'अर्जुलकुम'** पढ़ते हैं।

(शरह बकाया, सफा ४, सतर ११)

२-व ला तकरबू हुन्ना हत्ता **'यत्तहहुर्ना'** और **'यतहुर्ना'** दोनों तरह पर है।

(शरह बकाया, सफा ४, सतर २२)

समीक्षा–शरह बकाया मुसलमानों की बहुत प्रामाणिक पुस्तक है, जब यही किताब कुरान में लौट-फेरकर पाठ पढ़ना, बता रही है, तो कौन कह सकता है कि कुरान खुदा का पूरा कलाम है? कुरान में सैकड़ों कमी-बेशी समय-समय पर होती रही हैं। अतः–"यह खुदाई किताब* हरगिज नहीं है।"

३-एक कुएं में मरे हुए कुत्ते और औरतों के हैज (महावारी) के कपड़े पड़े हुए थे। हज़रत ने कहा–इसका पानी थाक है।

(शरह बकाया, सफा २५ का हाशिया)

---

* विशेष जानकारी के लिए पढ़ें–"कुरान खुदाई किताब नहीं है" तथा "मौजूदा कुरान खुदा का मुकम्मिल (सम्पूर्ण) ज्ञान नहीं है।" –"सम्पादक"

नोट–धन्य हो इस्लामी पवित्रता को?

४-हज़रत ने अहले अर्ना को ऊँट का पेशाब पीने का हुक्म दिया।

(शरह बकाया, सफा ३२)

५-जिसका गोश्त खाया जावे उसका पेशाब पाक है।

(शरह बकाया का हाशिया, सफा ३२)

६-इन्सान का थूक हर तरह पाक है, चाहे मोमिन हो चाहे काफिर हो।

(शरह बकाया, सफा ३३, सतर ९)

७-मुराद, बालिग से नौ बरस की लड़की है। (आयशा भी सम्भोग के समय ९ वर्ष की थी)

(शरह बकाया, सफा ५५)

८-शराब, सिरका बन जाये तो पाक है।

(शरह बकाया, सफा ७४)

९-पेशाब की, सरसों बराबर छींटे पाक हैं।

(शरह बकाया, सफा ७५)

१०-मिट्टी और गोबर से लिपा गया स्थान पाक है।

(शरह बकाया, सफा ७६)

११-गरमी की शिद्दत दोजख की भाप है।

(शरह बकाया, सफा ८२)

१२-अजान की इब्तिदा (शुरूआत) अबदुल्ला बिनजानिब

से हुई।

(शरह बकाया, सफा ८४ का हाशिया)

१३-कफन के लिये मर्द को इजार, कमीज, लिफाफा और औरतों के लिए दरअ, इजार, खिमार, लिफाफा और शिरका वाजिब है।

(शरह बकाया, सफा १८०)

१४-मरने पर निकाह बाकी नहीं रहता।

(शरह बकाया, सफा १८१)

१५-जकात में गैर मुसलिम को हक नहीं।

(शरह बकाया, सफा २२२)

१६-काबे का कोई जुज सामने न हो, तो नमाज जायज नहीं।

(शरह बकाया, सफा २६६)

१७-काबे के सुतून (खम्भे) को सामने करके नमाज पढ़ें।

(शरह बकाया, सफा २९७ का हाशिया)

१८-जिसने मेरी कब्र की जियारत की, उसने मेरी शफाअत हासिल की।

(शरह बकाया, सफा २९७ का हाशिया)

१९-बुखारी सही में है कि रसूल ने कहा-**"उहद पहाड़ हमको दोस्त रखता है और हम उसको दोस्त रखते हैं।"**

(शरह बकाया, सफा २९९ का हाशिया)

२०-बैर अरीस नाम के कुएं में हजरत ने थूका था इसलिए हाजियों को चाहिये कि उसका पानी जरूर पियें। (तब शबाब

मिलेगा)

(शरह बकाया, सफा २९९ का हाशिया)

नोट—भाइयों! इन्हीं की मेहरबानी से दुनिया में "थूका पंथी मजहब" चला है। अजीब मर्दुम परस्ती है।

२१-मदीने में एक मस्जिद है जिसका नाम "बनी जफर" है उसमें एक पत्थर है, उस पर हजरत मौहम्मद कभी बैठे थे। उस पर अगर औरत बैठे, तो हामिला* (गर्भवती) हो जावेगी।

(शरह बकाया, २९९ सफे का हाशिया)

२२-इमाम शाफई के नजदीक, जिस औरत से जिना (सम्भोग) किया, उसकी माँ और बेटी हराम नहीं। अर्थात् वह भी हलाल हैं, उनसे भी सम्भोग किया जा सकता है। (वाह रे पाकिजा इस्लाम!)

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा १० का हाशिया)

२३-नौ बरस से पहले लड़की मुश्तहात (सम्भोग) के कांबिल नहीं होती।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा १०)

समीक्षा—मुसलमानों के लिए यह हजरत का फेल (कर्म) सुन्नत होने की वजह से काबिले तकलीद हो गया। हिन्दुस्तान में इस वक्त अंग्रेजी राज्य है, जिसमें कानून ९ बरस की लड़की से सम्भोग नाजायज़ है। लेकिन मुसलमान यहाँ भी इस कानून को

---

* सारी उमर तो विलासिता में काटी ही मरने के बाद भी क्या असर दिखलाया? ऐसे चमत्कार को तो नमस्कार होना ही चाहिए। —"सम्पादक"

लिये बैठे हैं। यही वजह है कि नापाक जुर्म के मुरतकिब अकसर होते रहते हैं। हिन्दुस्तानी मुसलमान अन्धी तकलीद किये ही जाते हैं। अफसोस!

२४-अबूबकर ने ६ बरस की उम्र वाली अपनी बेटी "आयशा" का निकाह हज़रत मौहम्मद से कर दिया।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा २०)

२५-गैर मनकूहा (बिना ब्याही) की बकारत (क्वांरापन), कूदने-फाँदने, हैज, (मासिक धर्म) आने जख्म होने या ज्यादा उम्र के हो जाने या जिना (व्यभिचार) से टूट जाये, तो वह हुक्मन् बकर (कुमारी) ही है। ऐसा मानना चाहिए।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा २२ सतर ११)

२६-जफाफ (सोहबत अर्थात् सम्भोग) से पेश्तर (पहले) कुछ दे दे, जिससे वह खुश हो जावे।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा ३६)

२७-सोहबत से पहले तलाक देने पर मुता (एक गन्दी परम्परा जो मुसलमानों में प्रचलित है) करने पर ज्यादा फेर (धन-माल) ले।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा ३६)

२८-तालिबे शर्मगाह विदून माल हो ही नहीं सकता।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा ४३)

२९-जै (जितनी) दफा, वती (सोहबत) करें उतनी दफा

महर दे।

(शरह बकाया, जिल्द २, सफा ४९)

३०-बकौल वह्य (खुदायी आदेश) के हज़रत ने अपनी बीवी सौदा को तलाक दी।

(सफा ७२ का हाशिया)

३१-हज़रत आयशा फरमाती हैं कि सौदा को खौफ (डर) हुआ कि बूढ़ी होने से हज़रत (मुहम्मद साहब) उसे छोड़ देंगे।

(जिल्द २, सफा ७२ का हाशिया)

नोट—उसका समाधान सौदा ने खुद ही ढूंढ़ लिया क्योंकि वह हज़रत की कमी को अच्छी तरह जानती थी, इसलिए उसने अपनी सोहबत की बारी आयशा को दे दी तो तलाक से पीछा छूटा।

३२-हजरत आयशा फर्माती हैं कि—कुरान की कुछ आयतों को तो बकरियां ही चर गई थी।

(जिल्द २, सफा ७३ का हाशिया)

नोट—इसलिए मौजूदा कुरान पूरा कुरान नहीं है, इसलिए वर्तमान वाले बेचारे मुसलमान तो उस खुदायी ज्ञान से महरूम ही रहे।

३३-बेटे की लौंडी से (सोहबत) करने पर सजा नहीं।

(जिल्द २, सफा २८५)

"बाबुल हूद" वह फेल (कर्म) है जिसके करने पर सजा

मुकर्रर नहीं है।

३४-जिसने मुहर्रमात से निकाह किया (यानी माँ-बहन वगैरह से) तो हद सजा नहीं।

(जिल्द २, सफा २८९)

३५-जिहाद के मानी काफिरों से लड़ना है अर्थात् यह मजहबी लड़ाई है। जो हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह अपने धर्म के फैलाने हेतु जिहाद करे।

(जिल्द २, सफा ३३१)

३६-खलीफा जिना (बलात्कार) करे, तो सजा नहीं है।

(जिल्द २, सफा २८९, सतर ८)

समीक्षा–मालूम होता है कि खलीफा इतने जबरदस्त थे कि कोई भी काजी उनको सजा नहीं दे सकता था। इसलिए इस्लामी शरह बन गई कि–"खलीफा को जिना (बलात्कार) की सजा माफ है।" इसका नतीजा यह निकला कि ऐसे फेल (कर्म) ज्यादा हो गये। सुबूत के लिए देखें–**"तारीख खुलफा"**

किताबुल् जिहाद–

३७-मुसलमान इब्तदा करें कुफ्फार की लड़ाई पर।

(जिल्द २, सफा २३१)

३८-काफिर के घर जला दे, जैसे हो वैसे मकहूर (कहर) और मकतूल (कतल) किया करें।

(जिल्द २, सफा २३३)

३९-नफा नजर आये तो अहदे सुलह (सन्धि की शर्तों) को तोड़ दे।

(जिल्द २, सफा ३३७)

नोट—अब आप ही बतलायें कि मुसलमानों की सल्तनत में गैर मुस्लिम अर्थात् काफिर कैसे रहें?

४०-मुसलमानी सल्तनत में काफिरों के लिए नियम है कि वह अपने दोनों पांवों को एक तरफ लटकाकर (जैसे अंग्रेजों की औरतें चढ़ती हैं) घोड़े वगैरह पर सवार हो। उनकी औरतें राह में व हम्माम में हमारी औरतों से अलग रहें। हथियार न बांधें। मुरतद (जिसने इस्लाम छोड़ दिया हो) को कत्ल ही कर डाले। अकल और नकल (युक्ति और प्रमाण) से माकूल करने तथा मुबाहिशे (शास्त्रार्थ) में हरा देने पर भी इस्लाम न छोड़े।

(जिल्द २, सफा ३६० व ३६३)

समीक्षा—भला इस हठधर्मी का भी कोई ठिकाना है? कि हार जाने पर भी झूठ की ही पैरवी करते चले जायें? जबकि मुसलमानों को हिन्दुओं से इतनी नफरत है तो आपस में मेल कैसे हो सकता है? इस्लाम की तालीम ही में दूसरों से नफरत करना सिखाया जाता है। वही नफरत की लड़ाई की जड़ आज भी साबित हो रही है। परमात्मा इनको सद्बुद्धि दे।

४१-दुर्रे मुख्तार में है कि काफिरों के सर काटकर सबको दिखाना अर्थात् सार्वजनिक प्रदर्शन करना और प्रदर्शन हेतु दूसरे मुकामों पर भी भेजना चाहिए, जिससे मुसलमान खुश हों और

काफिर भयभीत हों।

(जिल्द २, सफा ३३४)

नोट : यह है इस्लाम का दूसरों के साथ मुहब्बत का नमूना।

४२-किसी माल वगैरह के लिए काफिरों की कब्र खोद डाले।

(जिल्द २, सफा ३३४)

४३-जो मुसलमान नहीं है, वह महज जानवर है। जैसे-**"हुम्कल् अनआमे बिल् हुम् अजल्ल"**।

(जिल्द २, सफा ३३४)

समीक्षा-जो हमको इन्सान भी न समझे उससे मेल-मिलाप कैसे हो सकता है? यहाँ तो गांधी की-**"हिन्दू-मुस्लिम एकता"** भी फेल हो गयी।

४४-काफिरों के बाग काट डालो, खेती उजाड़ दो, लड़ाई में हर बात जायज है।

(जिल्द २, सफा ३३४)

४५-हज़रत आयशा फरमाती है कि सब मुल्क तलवार से फतह हुए, सिर्फ मदीना कुरान से फतह हुआ। इस हाशिया का नाम "हाशिया चल्पी" है।

(जिल्द १, सफा २९७ का हाशिया)

॥ चौथा दस्ता समाप्त॥

पाँचवाँ दस्ता

मुरादाबाद के मुकदमें की सैर

मुरादाबाद में सरकार की तरफ से चलाये गये मुकदमे में जो किताबी सबूत पेश किये गये थे, उनकी फेहरिश्त (लिस्ट)–

१-हजरत आयशा से हैज (मासिक धर्म) की हालत में भी हज़रत मोहम्मद साहब ने मुबाशरत (सम्भोग) किया। देखिए प्रमाण–

१. सही बुखारी (छापा मिसर, जिल्द १ सफा २२०)

२. सही बुखारी

(तर्जुमा उर्दू छापा कर्जन प्रेस देहली, सफा २७७ हदीस नं० १८६९)

३. सही बुखारी... (हदीस नं० २८६, २८७ व २८८ सफा,४८)

४. अनबारुलहिदाया...

(शरह बकाया, उर्दू तर्जुमा, सफा ६४ सतर १९ से)

५. हफवातुल् मुसलमीन (सफा ७२ सतर १९)

६. इस्लाम तोड़ (सफा ११५)

२- हजरत आयशा, हज़रत मौहम्मद की खुश्क...छील डालती थीं देखिए प्रमाण–

१. अनवारुल हिदाया (सफा ६८ सतर १९)

२. गायतुल औतार (सफा १४५ जिल्द १ सतर ११)

३. इस्लाम तोड़ (सफा ११५)

३- रोजे की हालत में मुर्दा या हैवान से (सोहबत) करना.... देखिए प्रमाण-

१. फताबा काजीखाँ...

(जिल्द १, सफा १००, छापा नवलकिशोर, सतर २२)

२. तफजीहुल काजबी... (सफा ८६ सतर १४ से १९ तक)

३. शरह बकाया (उर्दू) (सफा ३३, सतर १७)

४. शरह बकाया (उर्दू)

(सफा १७४ सतर ६, ७ छापा नवलकिशोर)

५. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ७७, सतर ९)

६. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ७७, सतर १२)

७. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ५०५, सद्दीकी प्रेस, बरेली)

८. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ५०६, सतर ९)

९. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ४०९, सतर ६)

१०. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ५०९, सतर ८)

११. गायतुल औतार (जिल्द २, सफा १२, सतर १३ से)

४- लिंग पर कपड़ा लपेटकर सम्भोग करे तो गुसल वाजिब नहीं–

१. जाम उलूरमूज...(अरबी) (सफा २४)

२. हाशिया चलपी (सफा १२)

३. इस्लाम तोड़ (सफा १४१)

४. गायतुल औतार (जिल्द १ सफा ८७ सतर १६ व १७)

५. फतावा बरहना... (छापा हाश्मी प्रेस लाहौर,जिल्द २, सफा १०८)

६. तकजीहुल काजबीन (सफा ८६, सतर १९)

५- कानूनी कुदरत के खिलाफ स्त्री-पुरुष के साथ गुदा मैथुन–

१. शरह बकाया (उर्दू) (सफा ३२, सतर १०)

२. शरह बकाया (उर्दू) (सफा १८२, सतर ५ व ६)

३. हाशिये चलपी (सफा १६४, अरबी)

४. शरह बकाया (सफा ३०८ का फुटनोट)

५. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ७२, सतर १३)

६. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ७४, सतर १० व ११)

७. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ७५, सतर २४ व २५)

८. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा १३८, सतर १४ से)

९. गायतुल औतार (जिल्द २, सफा ४१०, सतर ५)

१०. गायतुल औतार (जिल्द २, सफा १२, सतर २२)

११. हफवातुल मुसलमीन (सफा ४२, सतर ५ से ४६ तक)

६- कुत्ते की खाल का डोल बनाकर पानी भरना और कुत्ते की खाल पर नमाज पढ़ना जायज है।

१. गायतुल औतार (जिल्द १, सफा ९९, सतर २८)

२. शरह बकाया (सफा ४४, जिल्द १, सतर १ व २)

३. शरह बकाया (उर्दू) (सफा ४४, सतर ६)

७- सुअर की खाल का डोल बनाना और उसमें पानी भरना तथा उससे वजू करना अर्थात् हाथ धोना जायज है-

१. कुत्ते को बगल में दाबकर नमाज पढ़ना।

२. रोजे में स्त्री के चुम्बन लेना तथा

८- मुहर्रमात (जिनसे निकाह जायज नहीं) से निकाह किया जावे-

१. शरह बकाया बाबुल हुइद

(जिल्द २, सफा ३०८, सतर १२, छापा कयूमी प्रेस, कानपुर)

२. गायतुल औतार

(जिल्द २, सफा १२, सतर २२, छापा सिद्दीकी प्रेस, बरेली)

॥ पांचवां दस्ता समाप्त॥

छठा दस्ता

गायतुल औतार की सैर (फुटकर मसाले)

१-खून से कुरान की "सूरये फातहा" लिख सकते हैं।

(गायतुल औतार जिल्द १, सफा १०१)

२-प्यास में शराब पीना जायज है–

(गायतुल औतार जिल्द १, सफा १०० तथा जिल्द २ सफा ८०)

३-जिसका गोश्त नहीं खाया जाता उसकी खाल, बाल, हड्डी और सूफ सब पाक हैं।

(शरह बकाया, उर्दू सफा ४५, सतर १६)

४-रफाअ ने अपनी औरत को तलाक मुगल्लिजा दी और उस औरत ने दूसरे खाविन्द से निकाह कर लिया। उस औरत ने हजरत के पास आकर कहा कि दूसरा मर्द तो नामर्द है। हजरत ने फरमाया कि–क्या तू पहले खाविन्द रफाअ के पास जाना चाहती है? उस औरत ने कहा–हाँ जाना चाहती हूँ। आपने फरमाया यह नहीं हो सकता, जब तक आप दोनों ४० दिन तक इद्दत* अर्थात् एक दूसरे से बिल्कुल अलग न रह लो।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा २ का हाशिया)

५-और न निकाह करे, लम्बी, दुबली और ठिगनी (छोटे

: * यह इस्लाम की विचित्र लीला है, कोई भी औरत पहले पति के पास तब तक नहीं जा सकती जब तक वह अन्य कहीं किसी दूसरे मर्द से चांदमारी (सम्भोग) न करा ले अर्थात् ४० दिन तक इद्दत में न रह ले। इसमें क्या फिलासफी है? यह तो मुस्लिम उलमा (विद्वान्) ही जान सकते हैं?-"सम्पादक"

कद वाली) बदशक्ल से, न बदखुल्क और औलाद वाली से।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा २ सतर २८)

६-सो अगर निकाह किया बाप की जौजा (स्त्री) से लड़के ने जो करीबुल बुलूग (युवती) नहीं, तो बाप की जौजा बाप पर हराम नहीं होगी—यानी बसबब अदम...के बहू करार नहीं ठहरेगी कि बाप पर हराम हो।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा १२, सतर २६)

समीक्षा—क्या अच्छी शरह है? बाप छोटी-सी लड़की से शादी कर ले, उसके बाद बाप उस लड़की को तलाक दे दे और उसका लड़का उससे निकाह कर ले। फिर वह लड़का भी उस छोटी-सी लड़की को तलाक दे दे, तो फिर दुबारा उस लड़के का बाप उस लड़की से शादी कर सकता है। इस तरह से हुक्म में कुरान की इस आयत की पाबन्दी नहीं रही—**"फइन्तल्लकहा फलातहिल्लौलहूमिन वादो हत्ता तनकिहा जौजन् गैरुह"** अर्थात् जिस औरत को तुमने तलाक दे दी, उससे तुम फिर निकाह नहीं कर सकते, जब तक कि वह औरत किसी गैर मर्द से हमबिस्तर न हो जावे अर्थात् उससे सम्भोग न करा ले।

७-अगर निकाह किया मर्द मशरिकी (पुरविये) ने, औरत मगरबिया (पछाँह की रहने वाली) से, इस तरह कि उसके व— ने मशरिक में निकाह कर दिया, तो साबित होगा कि उस औ की औलाद का नस्ब (सन्तान) उस मशरिकी मर्द से वा साबित होने जिमा हुक्मी के बसबब निकाह होने के इस वा कि कता मुसाफत (रास्ता) तै हो जाना बतरीक करामात र

बचवास्ता आमा ल उल्हिया के मुमकिन है।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा १५, सतर ६)

समीक्षा—इस शरई हुक्म ने तो बड़ी आसानी कर दी। इस शरही मसले का मतलब यह है कि मसलन् हिन्दू मुसलमान की लड़की है और लाहौर में रहती है, इस लड़की के वारिस ने एक मर्द से जो कलकत्ते में रहता है, निकाह कर दिया। निकाह के वक्त लड़की लाहौर में ही रही और मर्द कलकत्ते में रहा, इन दोनों के बगैर मिले ही काजी ने निकाह पढ़ा दिया। कुछ दिनों के बाद औरत के सन्तान पैदा हुई। यह सन्तान भी दोनों के बिना मिले ही अर्थात् बिना सम्भोग किये ही पैदा हो गई। इस मसले के बमूजिब वह सन्तान उस कलकतिये वाले मर्द की होगी। मुमकिन है, यह लाहौर और कलकत्ते की दूरी किसी करामात से जानी जाती रही हो। इसलिए हम कहते हैं कि पौ बारह हैं। अगर किसी तरह से हमल (गर्भ) रह गया, तो यह इस मसले को पेश कर दें और खलासी (छुटकारा) पा लें। वह मुसलमान मौलवी जरा गौर से इस मसले को पढ़ें और नियोग पर जुबान खोलने से शरमायें।

ताज्जुब तो यह है कि जहाँ इस तरह बिना मर्द-औरत के मिले सन्तान जायज करार दे दी गई हो, वहां नियोग जैसे पवित्र मसले पर भी एतराज करते हैं? आफरीन्! आपकी हिम्मत पर दा आफरीन्!!

८-या बकारत (क्वांरापन) जायज मुकर्रर हुई हो—और

योनि की झिल्ली टूट गई हो, जिना (बलात्कार) से, तो यह औरत हुक्मी बकारा है अर्थात्-शरअ के अनुसार वह क्वांरी ही है।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा २७, सतर ९)

समीक्षा-क्या इस मसले का आशय यह है कि अगर क्वांरी लड़की व्यभिचार करा ले, तो उसका क्वांरापन नहीं टूटता?

९-शु एवं पैगम्बर ने अपनी बेटी का निकाह हजरत मूसा से आठ-दस बरस बकरी चरवाकर कर दिया।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१)

१०-लौंडी मर्द की हो या औरत की हो, उसके सामने भी अपनी स्त्री से सम्भोग कर ले।

(गायतुल औतार २, जिल्द २, सफा ४३)

११-यानी अगर औरत से सम्भोग किये बिना मसास वगैरह के तथा योनि बिना स्पर्श आदि के तथा फिर तलाक दे दी तो उस औरत की बेटी जौज पर हराम नहीं।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४३, सतर २)

समीक्षा-मतलब यह है कि अगर जैद ने अपनी स्त्री से बिना स्पर्शादि के सन्तान पैदा की और वह सन्तान लड़की हुई। कुछ दिन के बाद जैद ने अपनी औरत को तलाक दे दी, तो वह लड़की जिसको जैद ने पैदा किया था, जैद के निकाह में : सकती है। जैद पर हराम नहीं हो सकती। शाबाश! क्या खू शरह (इस्लामिक नियम) है?

१२-और इज्न (हुक्म) देना, अजल में।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ६४, सतर १४)

समीक्षा–अजल के मसले को लिखते समय हमारी कलम रुकती है ऐसा गन्दा मसला किताब शरई का ही आभूषण हो सकता है। इसकी व्याख्या सरकारी कानून के खिलाफ है। इसलिए अगर किसी को यह मसला जानना हो, तो ऊपर लिखे पते पर देख लें या हमसे आकर जुबानी सुन लें। हम सारी इबारत को पढ़कर सुना देंगे। हमने औबसीन (फोहश-अश्लील) होने के कारण बहुत से गन्दे मसले लिखने से छोड़ दिये हैं। सरकारी कानून का ख्याल रक्खा गया है। सिर्फ उनके पते लिख दिये हैं ताकि धर्म चर्चा के समय काम दें।

१३-और कहा–हे फुकहाने-फिका के लिखने वालों ने कि मुब्बाह (उचित) है इस्कात हमल (गर्भपात) का चार महीने से पहले, अगर्चे बेइजाजत जौज (पति) की हो, यानी जान पड़ने से पहले गर्भपात करना दुरुस्त है।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ६४, सतर २३ व २४)

समीक्षा–पाठको! इस पर हम क्या लिखें? आप स्वयं ही इस मसले पर गौर करें कि यह कैसा पाप-कर्म युक्त सिद्धान्त है? छि:! छि:!!

१४-औरत ना फरमानी करे (आज्ञा न माने), तो उससे ोग करना छोड़ दें।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ७८)

नोट–इसका परिणाम क्या होगा? वह दूसरी जगह चाँदमारी कराकर व्यभिचार को बढ़ावा देगी। यह तो उसके लिए कोई उचित दण्ड नहीं रहा, आप गम्भीरता से इस पर विचार करें।

१५-और अगर जौज (पति) उनैन (नपुंसक) होगा और काजी ने तफरीक (स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध तोड़ दिया हो) करा दी वइल्लत नपुंसकता के फिर भी औरत लड़का जने (पैदा करे) दो बरस के अन्दर तो तफरीक बातिल हो गई अर्थात् सम्बन्ध टूटा हुआ न समझा जायेगा।* और वह लड़का उस नपुंसक का ही कहलायेगा।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा २०४)

१६-अगर मजबूब (हिजड़े) की औरत बाद तफरीक (स्त्री पुरुष के सम्बन्ध टूट जाने पर) दो बरस तक बच्चा जने, तो उसका नस्ब (औलाद) उस मजबूब (हिजड़े) से साबित ही होगा। बसबब एहतमात...!!

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा २०४)

समीक्षा–"**उनेन**" और "**मजबूब**" शब्दों की व्याख्या नहीं करते। ऊपर के पते पर देख लें। हम कानूनन् इनकी घृणित व्याख्या नहीं करते। केवल संकेत मात्र "**हिजड़ा**" शब्द लिख

---

* यह व्यभिचार का खुला प्रचार है, अगर वह औरत कहीं से भी सोहबत (सम्भोग) करके दो वर्ष में बच्चा पैदा कर लेती है तो वह उस नपुंसक का ही माना जायेगा तथा उनका सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हो सकेगा। अर्थात् औरत उस नपुंसक पति की आड़ (परदे) में जीवन भर व्यभिचार क रहेगी। -सम्पादक

दिया है। इस्लाम की शरअ बताती है कि दो बरस तक बच्चा पेट में रह सकता है। (यहां तो रहता नहीं शायद अरब में ऐसा होता होगा)

१७-जिना इबारत है बनी मुकल्लिफ नातिक ताला से यानी जो शख्स बरगपत (हाजत के लिए) अपनी बिला जब्रवती (गुदा मैथुन) करे...

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ३९६, सतर ४ से)

समीक्षा—जहाँ पर हमने...लगा दिये हैं वहाँ की इबारत अत्यन्त अश्लील है, जिसको देखना हो ऊपर के पते पर देख लें या हमसे पूछ लें।

१८-हर सजा को टालो जहाँ तक हो सके।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ३९७)

समीक्षा—हजरत ने अक्सर मौकों पर जिना वगैरह को टाल दिया है।

१९-दारुल हरब में लड़ाई के मौके पर जिना पर हद नहीं, सजा नहीं है।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ३९)

२०-इमाम आजम के नजदीक लवातत (लड़कों के साथ...) जिना नहीं।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४८९, सतर १०)

२१-और हद नहीं, सजा नहीं उस स्त्री के साथ व्यभिचार

करने में जिसको जिना के वास्ते इजारह लिया, यानी अगर औरत से मर्द ने यूँ पूछा कि मैं तुझको जिना के वास्ते इजारत लेता हूँ या इतने दराहम ले तो मैं तुझसे कुरबत करूँ तो इस पर हद सजा नहीं, इमाम के नजदीक।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१०)

२२-हद बराबर सजा नहीं, जबर्दस्ती के और जब्र के जिना (व्यभिचार) से।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१०)

२३-हद बराबर सजा नहीं, खलीफा और इमाम पर।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१०)

२४-लुकमा (ग्रास) अटका हो तो शराब पी लें।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१५)

२५-खमर (अंगूरी शराब) को छोड़कर और शराब पीने में नशा हो तो हद (सजा) है।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४१५)

२६-अपने बाप की लौंडी (रखैल) के साथ संभोग से सजा नहीं।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ४२४)

२७-अगर खाबिन्द चार बरस तक घर न आवे तो काजी तफरीक करा दे अर्थात् (स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध छुड़वा देवे)।

(गायतुल औतार जिल्द २, सफा ५३८)

समीक्षा—इस पर सवाल यह है कि यदि स्त्री से न रह जाये

तो क्या करे? व्यभिचार अच्छा है या किसी से धर्मानुसार सम्बन्ध कर लेना अच्छा है। बस न रहे जाने पर व्यभिचार न करके अपनी बिरादरी में बड़ों की सम्मति से पुत्र उत्पन्न कर लेना ही "नियोग" कहाता है इसलिए पाप नहीं।

धन्य हो! मुस्लिम शरह, कुरान व अन्य मुस्लिम मान्यताओं को।

॥ समाप्त॥

❑❑❑

विशेष दृष्ट्व्य–

भाइयो! आपने इस्लामिक मान्यताओं के कुछ नमूने देखे, अगर विस्तार से जानना चाहते हो तो इनके ग्रन्थ, जैसे–हदीसें, इस्लामिक इतिहास तथा खुदायी किताब कही जाने वाली पुस्तक –कुरान मजीद को देखें।

–सम्पादक

रंगीला रसूल

जिसमें हज़रत मौहम्मद साहब के जीवन की झाँकियों का दिग्दर्शन होगा!

सुन्नी इस्लाम की नंगी तस्वीर

इस्लाम में ७२ फिरके कहे जाते हैं जिनमें से एक फिरका हनफ़ी मजहब वालों का माना जाता है, उनकी मान्यताओं का पूरा खुलासा इस पुस्तक में मिल जायेगा।

मुसलमानी की ज़िन्दगानी

मुसलमानी, खतना को भी कहते हैं, इसके कितने भयंकर परिणाम देखने में आये हैं, उन सबका पूरा खुलासा इस पुस्तक में पढ़ें!

अल्लाह हमें रोने दो

इस पुस्तक को बादशाह शाहजहां की बड़ी बेटी जहांआरा बेगम द्वारा लिखा गया है, जिसमें उसने इस्लाम की मान्यताओं को सामने रखते हुए अपने जीवन के अनुभव बतलाये हैं तथा अपनी जिन्दगी का वो मार्मिक दुखड़ा रोया है, जिसमें वह न सुहागिन रही और न ही बेवा (विधवा) क्योंकि उसे उसके बाप शाहजहां ने खुद ही अपने विषय भोग के लिए अपने हरम में रख लिया था और जिन्दगी भर उसका निकाह नहीं होने दिया था। मौलवियों ने भी फतवा जारी कर दिया था कि–**"जिस वृक्ष को लगाने का अधिकार बादशाह को है उसके फल खाने का अधिकार भी उसे है।"** अजीब अन्धेर है! पूर्ण जानकारी के लिए अवश्य पढ़ें।

मुसलमानों की बकवास

जादू वो जो सर चढ़ कर बोले।
क्या मज़ा जो ग़ैर पर्दा खोले।।

मिर्जा अहमद सुलतान द्वारा लिखित बहुत ही प्रामाणिक पुस्तक जिसमें इस्लाम के हर बिन्दु पर अन्वेषण रूप में कलम उठायी गयी है तथा झूठा साबित करने वालों को चैलेंज किया गया है, पठनीय पुस्तक है।

—"हिज़बुल्ला"

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्र परिग्रहण क्रमांक 5315
...नन्द महिला म...